नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

# परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 375, नई दिल्ली, रविवार 15 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

**आज का सुविचार**

"जीवन में सफल वही होता है,जो कठिनाइयों से घबराता नहीं,बल्कि उनसे सीखकरऔर मजबूत बनता है।"

02 सुबह का जादू: आपका 'सोने का पिंजरा' आपकी शांति क्यों छीन रहा है?....

06 सिमटते संसाधनों के बीच अक्षय ऊर्जा

08 फायर सेफ्टी नियमों की अनदेखी पर कार्रवाई की मांग, पीएम को भेजी शिकायत

## अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://www.newsparivahan.com/chief-editor/https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

**तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026**

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

सड़क सुरक्षा | महिला सुरक्षा | प्रदूषण | साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

**दिनांक:** 29 मार्च (रविवार) **समय** - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
**स्थान** - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

## टेंपल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
## वैष्णवी फाउंडेशन एवं द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सौजन्य से

"पूर्णता निःशुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर
आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय, टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित

# पूर्णतः निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

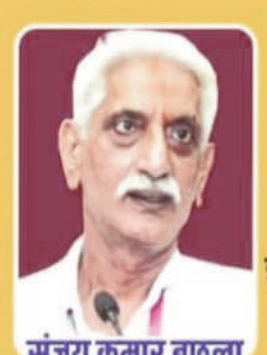

संजय कुमार बाठला
राष्ट्रीय अध्यक्ष,

* वैष्णवी फाउंडेशन के सहयोग द्वारा

1. आंखों की जांच, 2. रक्तचाप, 3. मधुमेह जांच, 4. मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ
5. भारतीय लेंस की सुविधा * द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सहयोग द्वारा
6. बीपी, 7. शुगर, 8. कोलेस्ट्रॉल, 9. हड्डियों का घनत्व,

इस जांच शिविर मे ऊपरलिखित सभी जांच पूरी तरह से निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम् अन्य की निगरानी में जांच,

वैष्णवी फाउंडेशन: 1. डॉ मनोज कुमार दुबे, 2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल चिकित्सक 4. जगदीश

**जांच शिविर : दिनांक: 15 मार्च (रविवार) 2026**
**स्थान: गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली 110027**
**समय: 10:00 AM to 02:00 PM**

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में समय पर पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।
विशेष जानकारी मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर बालाजी हॉस्पिटल लायन्स हॉस्पिटल पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।
स्वस्थ रहें, जागरूक रहें। आपकी सेहत- हमारी प्राथमिकता।

निवेदक :-
संजय कुमार बाठला-राष्ट्रीय अध्यक्ष, पिंकी कुंडू-महासचिव, केके छाबड़ा-उपाध्यक्ष, सुनीता शर्मा-सचिव, अभिषेक राजपूत-सचिव

पिंकी कुंडू
महासचिव

अशोक नारंग
उपाध्यक्ष

के.के. छाबड़ा
उपाध्यक्ष

सुनिता शर्मा
निजि सचिव (महासचिव)

अभिषेक राजपूत
सचिव

जयभगवान
सदस्य

RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499
परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

## आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

**दिनांक:- 29 मार्च , स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे**

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

### मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

**TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED**
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

# स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

# सुबह का जादू: आपका 'सोने का पिंजरा' आपकी शांति क्यों छीन रहा है?

डॉ. अनुभा पुंडीरा
एसोसिएट प्रोफेसर – ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी
मनोवैज्ञानिक और लाइफ कोच

**आधुनिक आराम का विरोधाभास**

हम "सोने के पिंजरों" के दौर में जी रहे हैं। हमारे बेडरूम 21वीं सदी के आराम के अद्भुत नमूने हैं—जिनमें मेमोरी फोम के गद्दे, शांत एयर कंडीशनिंग और साउंडप्रूफ खिड़कियां लगी हैं। फिर भी, एक मनोवैज्ञानिक और लाइफ कोच के तौर पर, मैं एक बढ़ता हुआ विरोधाभास देखती हूँ: हमारे पास आराम करने के लिए हर तरह की भौतिक सुविधा है, लेकिन मन की शांति अभी भी हमसे दूर है। हम इतिहास की सबसे ज़्यादा भौतिक रूप से आरामदायक पीढ़ी हैं, लेकिन शायद मानसिक रूप से सबसे ज़्यादा थकी हुई पीढ़ी भी।

इस आधुनिक थकान का हल किसी नए गैजेट या दवा की बोतल में नहीं मिलता। इसके बजाय, इसका हल 'पंचतत्व' (पांच तत्वों) और ध्वनि के प्राचीन, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित विज्ञान की ओर लौटने में है।

**आधी रात का कार्बन संकट**

इस पारंपरिक बात में एक गहरा जैविक संकेत छिपा है कि हम सुबह जल्दी उठने वालों की "आखिरी पीढ़ी" बनते जा रहे हैं। देर रात तक जागने और एयर-कंडीशन्ड कमरों में अकेले रहने की हमारी आधुनिक आदत एक खामोश संकट पैदा कर रही है: कार्बन डाइऑक्साइड का जमा होना।

बंद, हवादार न होने वाले बेडरूम में, पूरी रात $CO_2$ का स्तर बढ़ता रहता है। जब हम सुबह देर से उठते हैं, तो हमारा दिमाग सचमुच शरीर के अंदर जमा हुए ज़हरीले तत्वों (metabolic waste) में डूबा हुआ होता है। सूरज के साथ जागना सिर्फ़ एक अनुशासन नहीं है; यह "तत्वों को आत्मसात करने" का एक तरीका है। भोर अपने साथ 'ओजस' (जीवन शक्ति) और 'तेजस' (तेज) लेकर आती है। जब हम सूर्योदय के समय बाहर कदम रखते हैं, तो हम रात की सुस्ती को दूर करते हैं और अपनी आंतरिक घड़ी को पृथ्वी की धड़कन के साथ तालमेल बिठाते हैं।

**कंपन की जाँच: किस्सों से लेकर प्रमाण तक**

मेरे शोध, "गायत्री मंत्र जाप और

निर्देशित श्रवण के माध्यम से ध्यान" में, हमने पारंपरिक मान्यताओं से आगे बढ़कर यह देखा कि प्राचीन अभ्यास आधुनिक मनोवैज्ञानिक मापदंडों (psychometrics) के साथ कैसे तालमेल बिठाते हैं। Insomnia Severity Index (ISI) और DASS (अवसाद, चिंता, तनाव पैमाना) जैसे मान्यता प्राप्त उपकरणों का उपयोग करके, हमने 30 दिनों के "वैदिक रीसेट" के दौरान प्रतिभागियों पर नज़र रखी।

इसके परिणाम चौंकाने वाले हैं। प्रतिभागियों ने एक खास तरीका अपनाया: रोज़ाना गायत्री मंत्र की तीन मालाएँ जपना, और उसके बाद 10 मिनट तक शर्मा आचार्य जी के गूंजते हुए, एक जैसे उच्चारण को ध्यान से सुनना।

डेटा एक ऐसी बारीक लेकिन असरदार बात की ओर इशारा करता है: मंत्र की लयबद्ध बनावट हमारे नर्वस सिस्टम के लिए एक शारीरिक 'मेट्रोनोम' (लय-निर्धारक) का काम करती है। इसकी धुनें धीरे-धीरे शरीर को ध्यान वाली शांति की ओर ले जाती हैं, जिससे पैरासिम्पैथेटिक गतिविधि सक्रिय हो जाती है—जो शरीर का स्वाभाविक 'आराम और पाचन' (rest and digest) वाला मोड है।

तालमेल की शक्ति: सक्रिय ध्यान और निष्क्रिय आराम का मिलन

इस तरीके को अनोखा बनाने वाली बात है दो अलग-अलग तरीकों के बीच का तालमेल:

सक्रिय चरण: तीन मालाएँ जपने के लिए लयबद्ध ध्यान की ज़रूरत होती है, जो शरीर को ध्यान वाली शांति की ओर खींच ले जाता है। यह एक संज्ञानात्मक अवरोधक (cognitive disruptor) का काम करता है, जो 'सोच के जाल' (rumination) को तोड़ देता है—यानी काम या चिंताओं के बारे में तेज़ी से दौड़ते उन विचारों को, जो आम तौर पर तनाव बढ़ाते हैं और हमें जगाए रखते हैं।

निष्क्रिय चरण: इसके बाद 10 मिनट तक ध्यान से सुनने का सत्र होता है। यह चरण मन को तनाव पैदा करने वाली बातों से अपनी पकड़ ढीली करने में मदद करता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई भीड़-भाड़ वाली सड़क के शोर से निकलकर किसी शांत मंदिर में चला जाए।

जब इन दोनों तरीकों को मिलाया जाता है, तो ये सिर्फ़ जुड़ते ही नहीं हैं; बल्कि ये एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं और एक-दूसरे को मज़बूत बनाते हैं। इससे एक ऐसा तालमेल बनता है, जो इन दोनों तरीकों को अलग-अलग आज़माने से कहीं ज़्यादा असरदार महसूस होता है।

आधुनिक मन के लिए एक कोच का सुझाव

इसका चिकित्सकीय महत्व साफ़ है: प्राचीन तरीकों को आधुनिक, समग्र स्वास्थ्य ढाँचों में भरोसेमंद तरीके से शामिल किया जा सकता है। मंत्र का अभ्यास मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक ऐसा गैर-दवा वाला तरीका लगता है, जिससे सचमुच फ़ायदा होने की उम्मीद है। अपनी जीवन-शक्ति को फिर से पाने के लिए, मैं रोज़ाना एक आसान सा नियम अपनाने का सुझाव देता हूँ:

सुबह का स्वागत करें: सूरज के साथ जागें, ताकि शरीर से 'कार्बन' (अशुद्धियाँ) निकल जाए और आप सुबह की ताज़गी (ओजस) को सोख सकें।

3+10 का नियम: 20 मिनट सक्रिय रूप से मंत्र जपने (3 मालाएँ) और 10 मिनट ध्यान से सुनने के लिए समर्पित करें।

प्रकृति से जुड़ें: इन तरीकों का इस्तेमाल करके डिजिटल शोर से खुद को अलग करें और अपनी अंदरूनी लय से फिर से जुड़ें।

एक शिक्षक और कोच के तौर पर, मेरा लक्ष्य यह दिखाना है कि हमें ज़रूरी नहीं कि ज़्यादा गोलियों (दवाओं) की ज़रूरत हो; हमें तो बस ज़्यादा 'वर्तमान में जीने' (presence) की ज़रूरत है। इन वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित प्राचीन परंपराओं की ओर लौटकर, हम मानसिक स्पष्टता, गहरी नींद और सच्ची जीवन-शक्ति पाने का एक टिकाऊ रास्ता खोज सकते हैं। कोच का कोना: 3 आसान टिप्स

बिना टेक वाला पहला घंटा: अपने सेशन के बाद तक फ़ोन का इस्तेमाल न करके अपनी सुबह के 'ओजस' को बचाएँ।

कंपन पर ध्यान: मंत्र जाप करते समय, अपनी छाती में होने वाले कंपन पर ध्यान दें; इससे वेगस नर्व उत्तेजित होती है।

# सीएसआईआर के वैज्ञानिकों ने विकसित किया उच्च-प्रोटीन "डिज़ाइनर चावल"

बेहतर पोषण और चयापचय स्वास्थ्य के लिए एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक नवाचार

खाद्य विज्ञान और पोषण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में, काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (CSIR) के वैज्ञानिकों—विशेषकर CSIR-नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी (CSIR-NIIST)—ने एक उच्च-प्रोटीन "डिज़ाइनर चावल" विकसित किया है। इसका उद्देश्य दो बड़े वैश्विक स्वास्थ्य-चुनौतियों का समाधान करना है: कुपोषण और डायबिटीज जैसी जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियाँ।

यह नवाचार विश्व के सबसे अधिक उपभोग किए जाने वाले खाद्य पदार्थों में से एक—चावल—को एक पोषण-समृद्ध कार्यात्मक खाद्य (Functional Food) में परिवर्तित करने का एक अग्रणी प्रयास है, और इसकी विशेषता यह है कि लोगों को अपने पारंपरिक भोजन की आदतों में कोई परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं होगी।

इस नवाचार की आवश्यकता क्यों थी

चावल एशिया और अफ्रीका सहित विश्व की आधी से अधिक आबादी का मुख्य भोजन है। किंतु पारंपरिक रूप से पॉलिश किए गए सफेद चावल में दो प्रमुख सीमाएँ होती हैं:

कम प्रोटीन मात्रा – सामान्यतः केवल 6–8% प्रोटीन

उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) – जिससे रक्त में शर्करा का स्तर तेजी से बढ़ सकता है

चूँकि करोड़ों लोग अपनी दैनिक ऊर्जा के लिए मुख्यतः चावल पर निर्भर हैं, इसलिए इन सीमाओं के कारण कई गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं:

प्रोटीन की कमी (Protein Malnutrition)

सूक्ष्म पोषक-तत्वों की कमी (जिसे "Hidden Hunger" कहा जाता है)

टाइप-2 डायबिटीज़ की बढ़ती घटनाएँ

नया विकसित डिज़ाइनर चावल इन सभी समस्याओं का एक साथ समाधान करने का प्रयास करता है।

डिज़ाइनर चावल की प्रमुख पोषण विशेषताएँ

1. तीन गुना अधिक प्रोटीन

इस नवाचार की सबसे उल्लेखनीय विशेषता इसका अत्यधिक उच्च प्रोटीन स्तर है।

पारंपरिक चावल: 6–8% प्रोटीन

डिज़ाइनर चावल: 20% से अधिक प्रोटीन

अर्थात यह चावल पारंपरिक सफेद चावल की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक प्रोटीन प्रदान करता है।

यह सुधार विशेष रूप से उन जनसंख्या समूहों के लिए अत्यंत लाभकारी हो सकता है, जहाँ लोग चावल पर निर्भर हैं लेकिन उन्हें पर्याप्त प्रोटीन-युक्त भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता।

2. कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (डायबिटीज-अनुकूल)

इस नए चावल का ग्लाइसेमिक इंडेक्स 55 से कम है, जिसका अर्थ है कि यह शरीर में ग्लूकोज़ को धीरे-धीरे रिलीज़ करता है।

इससे निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं:

रक्त शर्करा के अचानक बढ़ने को कम करना

मेटाबोलिक स्वास्थ्य में सुधार

डायबिटीज या प्री-डायबिटीज वाले व्यक्तियों के लिए बेहतर आहार विकल्प

3. आवश्यक सूक्ष्म पोषक-तत्वों से समृद्ध

इस चावल को कई महत्वपूर्ण पोषक-तत्वों से समृद्ध किया गया है, जैसे:

आयरन (Iron)

फोलिक एसिड (Folic Acid)

विटामिन B12

ये पोषक-तत्व उन क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जहाँ लोग मुख्यतः कार्बोहाइड्रेट-प्रधान भोजन करते हैं और उन्हें पर्याप्त सूक्ष्म पोषक-तत्व नहीं मिल पाते।

वैज्ञानिकों ने यह "डिज़ाइनर चावल" कैसे बनाया

विशेष बात यह है कि इस तकनीक में जीन संशोधन (Genetic Modification) का उपयोग नहीं किया गया है।

इसके स्थान पर वैज्ञानिकों ने उन्नत खाद्य-प्रसंस्करण और एक्सट्रूज़न तकनीक का उपयोग किया।

**इस प्रक्रिया में:**

टूटे हुए चावल (Broken Rice), जो सामान्यतः मिलिंग का कम मूल्य वाला उप-उत्पाद होता है, उसे चावल के आटे में बदला जाता है।

इस आटे को प्रोटीन स्रोतों और सूक्ष्म पोषक-तत्वों के साथ मिश्रित किया जाता है।

विशेष मशीनों और प्रसंस्करण तकनीक की सहायता से इसे फिर से चावल जैसे दानों के रूप में ढाला जाता है, जो स्वाद, बनावट और पकाने के तरीके में प्राकृतिक चावल के समान होते हैं।

इस प्रकार चावल की पोषण संरचना को वैज्ञानिक रूप से पुनः अभिकल्पित (Re-engineered) किया जाता है।

इस तकनीक के अतिरिक्त लाभ

1. कृषि उप-उत्पादों का बेहतर उपयोग

यह तकनीक टूटे हुए चावल का उपयोग करती है, जिसे अक्सर बहुत कम कीमत पर बेचा जाता है या पशु आहार में प्रयोग किया जाता है।

इससे किसानों और खाद्य उद्योग के लिए अधिक मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार होता है।

2. भोजन की आदतों में बदलाव की आवश्यकता नहीं

अनेक पोषण कार्यक्रम इसलिए सफल नहीं हो पाते क्योंकि वे लोगों से भोजन की आदतें बदलने की अपेक्षा करते हैं।

डिज़ाइनर चावल इस समस्या को समाप्त करता है—लोग वही चावल खाएँगे, लेकिन बेहतर पोषण के साथ।

3. "हिडन हंगर" से लड़ने की क्षमता

"Hidden Hunger" वह स्थिति है जब व्यक्ति को पर्याप्त कैलोरी तो मिलती है, लेकिन आवश्यक पोषक-तत्व नहीं मिलते।

यह चावल बड़े पैमाने पर प्रोटीन और माइक्रोन्यूट्रिएंट की कमी को कम करने में मदद कर सकता है।

**नवीनतम प्रगति और व्यावसायीकरण**

यह तकनीक अब प्रयोगशाला से निकलकर औद्योगिक उत्पादन की दिशा में अग्रसर हो रही है।

CSIR ने इस तकनीक को बड़े उद्योग साझेदारों—जैसे Tata Consumer Products Limited—को स्थानांतरित किया है, ताकि इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सके।

इसे "CSIR-NIIST Tech Connect: From Lab to Market" कार्यक्रम के दौरान नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया।

इसका अर्थ है कि निकट भविष्य में यह पोषण-समृद्ध डिज़ाइनर चावल बाज़ार में उपलब्ध हो सकता है।

व्यापक वैज्ञानिक महत्व

यह विकास खाद्य विज्ञान की एक नई अवधारणा को दर्शाता है, जिसे "Food Architecture" कहा जाता है—अर्थात सामान्य खाद्य पदार्थों को वैज्ञानिक रूप से पुनः डिजाइन करके उन्हें अधिक स्वास्थ्यवर्धक बनाना।

अब केवल सप्लीमेंट्स या आहार परिवर्तन पर निर्भर रहने के बजाय वैज्ञानिक मुख्य खाद्य पदार्थों को ही अधिक पौष्टिक बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

ऐसी तकनीकें भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं:

विकासशील देशों में कुपोषण से लड़ने में

जीवन-शैली रोगों के बोझ को कम करने में

वैश्विक खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने में

**✓ निष्कर्ष**

CSIR के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह उच्च-प्रोटीन डिज़ाइनर चावल कृषि, पोषण और खाद्य-इंजीनियरिंग का एक अद्भुत संगम है।

प्रोटीन की मात्रा बढ़ाकर, ग्लाइसेमिक इंडेक्स को कम करके और आवश्यक सूक्ष्म पोषक-तत्वों को समृद्ध करके यह नवाचार विश्व के सबसे अधिक उपभोग किए जाने वाले खाद्य पदार्थों में से एक की पोषण गुणवत्ता को उल्लेखनीय रूप से बेहतर बना सकता है।

यदि यह तकनीक सफलतापूर्वक व्यावसायिक रूप से उपलब्ध और सुलभ हो जाती है, तो यह करोड़ों—संभवतः अरबों—लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाने की क्षमता रखती है, जो प्रतिदिन अपने भोजन के रूप में चावल पर निर्भर हैं।

**डिज़ाइनर चावल**

एक विशेष प्रकार का चावल है जिसे सीएसआईआर (काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च) के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। यह चावल कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाला होता है, जिससे डायबिटीज़ के मरीजों के लिए यह फायदेमंद हो सकता है।

**विशेषताएँ 🔍**

- ज़्यादा प्रोटीन: इस चावल में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, जो शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्व है।

- कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स: यह रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद करता है।

- डायबिटीज़ के लिए फायदेमंद: डायबिटीज़ के मरीजों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है।

**विकास के पीछे का उद्देश्य**

सीएसआईआर के वैज्ञानिकों ने इस चावल को डायबिटीज़ जैसी बीमारी से निपटने के लिए विकसित किया है, जिससे लोगों को स्वस्थ और पौष्टिक आहार मिल सके।

## दिनांक 15.03.2026 रविवार तदनुसार संवत 2082 चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की ग्यारवीं तिथि को आने वाला व्रत–

### "पापमोचनी एकादशी"

पापमोचनी एकादशी चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है। पाप का अर्थ है अधर्म या बुरे कार्य और मोचनी का अर्थ है मुक्ति पाना। तो पापमोचनी एकादशी पापों को नष्ट करने वाली एकादशी है। यह व्रत व्यक्ति को उसके सभी पापों से मुक्त कर उसके लिये मोक्ष के मार्ग दिखता है। इस एकादशी के दिन भगवान विष्णु जी का पूजन करने से अतिशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

**कथा :** भविष्य पुराण की कथा के अनुसार भगवान अर्जुन से कहते हैं, राजा मान्धाता ने एक समय में लोमश ऋषि से जब पूछा–'हे प्रभु! यह बताएं कि मनुष्य जो जाने अनजाने में पाप कर्म करता है वह उससे कैसे मुक्त हो सकता है।' राजा मान्धाता के इस प्रश्न के जवाब में लोमश ऋषि ने राजा को एक कहानी सुनाई।

लोमेश ऋषि ने कहा–'चैत्ररथ नामक सुन्दर वन में च्यवन ऋषि के पुत्र मेधावी ऋषि तपस्या में पूरे लीन थे। इस वन में एक दिन मंजुघोषा नाम की अप्सरा की नजर ऋषि पर पड़ी तो वह उन पर मोहित हो गयी और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने हेतु प्रयत्न करने लगी।

कामदेव भी उस समय उस वन से गुजर रहे थे। इसी क्रम में उनकी नजर अप्सरा पड़ी। वह उसकी मनोभावना को समझते हुए उसकी सहायता करने लगे। अप्सरा अपने प्रयत्न में सफल हुई और ऋषि वासना के प्रति आकर्षित हो गए।

काम के वश में होकर ऋषि शिव की तपस्या का व्रत भूल गए और अप्सरा के साथ रमण-गमन करने लगे। कई वर्षों के बाद जब उनकी चेतना जगी तो उन्हें एहसास हुआ कि वह शिव की तपस्या से विरक्त हो चुके हैं।

तब उन्हें उस अप्सरा पर बहुत क्रोध हुआ और तपस्या भंग करने का दोषी जानकर ऋषि ने अप्सरा को श्राप दे दिया कि तुम पिशाचिनी बन जाओ। ऐसी ही अनेकानेक पोस्ट पाने के लिये हमारे फेसबुक पेज 'श्रीजी की चरण सेवा' को फॉलो और लाईक करें तथा हमारा व्हाट्सएप चैनल ज्वॉइन करें। चैनल का लिंक हमारी फेसबुक पर देखें। श्राप से दुःखी होकर वह ऋषि के पैरों पर गिर पड़ी और श्राप से मुक्ति के लिए अनुनय-विनय करने लगी।

मेधावी ऋषि ने तब उस अप्सरा को विधि-पूर्वक चैत्र कृष्ण एकादशी का व्रत करने के लिए कहा। भोग में निमग्न रहने के कारण ऋषि का तेज भी लोप हो गया था अतः ऋषि ने भी इस एकादशी का व्रत किया जिससे उनके पाप नष्ट हो गए। उधर अप्सरा भी इस व्रत के प्रभाव से पिशाच योनि से मुक्त हो गयी और उसे सुन्दर रूप प्राप्त हुआ। जिसके बाद वह अप्सरा स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर गई।'

**व्रत विधि**

01. पापमोचनी एकादशी व्रत में भगवान विष्णु के चतुर्भुज रूप की पूजा की जाती है।
02. व्रत के दिन सूर्योदय काल में उठें, स्नान कर व्रत का संकल्प लें।
03. संकल्प लेने के बाद भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए।
04. उनकी प्रतिमा के सामने बैठकर श्रीमद भागवत कथा का पाठ करें।
05. एकादशी व्रत की अवधि 24 घंटों की होती है।
06. एकादशी व्रत में दिन के समय में श्री विष्णु जी का स्मरण करना चाहिए।
07. दिन व्रत करने के बाद जागरण करने से कई गुणा फल प्राप्त होता है।
08. इसलिए रात्रि में श्री विष्णु का पाठ करते हुए जागरण करना चाहिए।
09. द्वादशी तिथि के दिन प्रातःकाल में स्नान कर, भगवान श्री विष्णु कि पूजा करें।
10. किसी जरूरतमंद या ब्राह्मणों को भोजन व दक्षिणा देकर व्रत का समापन करें।
11. यह सब कार्य करने के बाद ही स्वयं भोजन करना चाहिए।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

# परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 375, नई दिल्ली, रविवार 15 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"जीवन में सफल वही होता है,जो कठिनाइयों से घबराता नहीं,बल्कि उनसे सीखकरऔर मजबूत बनता है।"

02 सुबह का जादू: आपका 'सोने का पिंजरा' आपकी शांति क्यों छीन रहा है?....

06 सिमटते संसाधनों के बीच अक्षय ऊर्जा

08 फायर सेफ्टी नियमों की अनदेखी पर कार्रवाई की मांग, पीएम को भेजी शिकायत

# दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे: डीएनडी से मीठापुर तक 98% काम पूरा, जल्द फर्राटा भरेंगे वाहन; लाखों लोगों को मिलेगा फायदा

डीएनडी से मीठापुर तक दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे का 98% काम पूरा हो चुका है। जून तक इसके खुलने की उम्मीद है, जिससे दिल्ली, नोएडा और गाजियाबाद के लोगों को आवागमन में सुविधा मिलेगी।

**दिल्ली।** डीएनडी से मीठापुर तक दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे शुरू होने का इंतजार जल्द ही खत्म होने वाला है। इस नौ किलोमीटर के हिस्से का लगभग 98 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है।

वहीं, मदनपुर खादर के पास आगरा कैनाल पर स्टील ब्रिज का काम तेजी ते से चल रहा है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण का (एनएचएआई) का दावा है कि ब्रिज के निर्माण की गति तय लक्ष्य के अनुरूप है। ऐसे में हर हाल में इस हिस्से को जून तक पूरा कर दिया जाएगा।

इस खंड के निर्माण की लागत 1836 करोड़ रुपये है। एक्सप्रेसवे का जैतपुर से आगे यानी मीठापुर से फरीदाबाद के सेक्टर-65 तक के 24 किलोमीटर का हिस्सा पहले से ही चालू है। इससे दक्षिणी दिल्ली के कुछ ही हिस्से के लोगों को लाभ मिल रहा है।

अब डीएनडी से मीठापुर तक का एक्सप्रेसवे का हिस्सा शुरू होने से दिल्ली समेत नोएडा, गाजियाबाद के लोगों को भी आवागमन में काफी सुविधा मिलेगी और उनका समय भी बचेगा। वहीं भीड़ कम होने पर दिल्ली में प्रदूषण के स्तर में भी कमी आएगी।

**डीएनडी से मीठापुर आने वाले भी एक्सप्रेसवे पर चल सकेंगे**

मीठापुर चौक पर एंट्री और एग्जिट प्वाइंट पहले ही बना दिए गए हैं, जिससे दक्षिण दिल्ली के लोगों को खास लाभ मिलेगा। डीएनडी से मीठापुर तक आने वाले भी इस एक्सप्रेस वे का इस्तेमाल कर सकेंगे और उन्हें जाम से मुक्ति मिलेगी।

यह कार्य वर्ष 2025 में पूरा होना था, पर आगरा कैनाल पर पुल के निर्माण कार्य में विलंब के चलते प्रोजेक्ट विलंबित हुआ। एनएचएआइ के अधिकारियों के मुताबिक बिना पिलर के 130 मीटर के स्टील आर्च ब्रिज का काम आधे से अधिक पूरा हो चुका है। इसके पूरा होते ही दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के इस हिस्से पर भी वाहनों का परिचालन शुरू हो सकेगा।

- डीएनडी-मीठापुर एक्सप्रेसवे का 98% काम पूरा, जून तक खुलेगा।
- मदनपुर खादर में आगरा कैनाल पर स्टील ब्रिज का निर्माण जारी।
- दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद के लोगों को आवागमन में मिलेगी सुविधा।

**मीठापुर के आगे 50 किलोमीटर तक चालू है एक्सप्रेसवे**

मीठापुर से फरीदाबाद के सेक्टर-65 तक का 24 किलोमीटर और सेक्टर-65 से आगे सोहना तक 26 किलोमीटर का भाग वाहन चालकों को लिए पहले से ही चालू है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फरवरी 2023 में एक्सप्रेस-वे के सोहना-दौसा खंड का उद्घाटन कर चुके हैं। इस हिस्से के खुलने के बाद दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद से फरीदाबाद, पलवल आने-जाने वाले हजारों वाहन चालकों को बड़ी राहत मिली है और जयपुर जाना भी आसान हो गया है।

"डीएनडी से मीठापुर तक दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे भी जून में शुरू हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन व परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के नेतृत्व में ऐक तरह से दक्षिणी दिल्ली के लोगों को नई लाइफलाइन मिलने जा रही है। दक्षिणी दिल्ली के लोगों को सोहना जाने में पहले ढाई घंटे लगते थे। अब लोग वहां तक 28 मिनट में पहुंच रहे हैं और 30 मिनट में बड़ौदा-मुंबई हाइवे टच कर जा रहे हैं।

**- रामवीर सिंह बिधूड़ी, सांसद, दक्षिणी दिल्ली**

# दिल्ली: नबी करीम मेट्रो स्टेशन पर होगा अनोखा इन-लाइन इंटरचेंज, यात्रियों को मिलेगी बड़ी सुविधा

दिल्ली मेट्रो नेटवर्क में नबी करीम स्टेशन एक अनूठा इंटरचेंज बनेगा, जहाँ पहली बार एक ही लाइन पर यात्री ट्रेन बदल सकेंगे। यह मजेंटा लाइन के दो कॉरिडोर को जोड़ेगा, जिससे बॉटनिकल गार्डन से इंद्रलोक तक यात्रा सुगम होगी।

**नई दिल्ली।** दिल्ली मेट्रो के नेटवर्क में पहली बार एक ही लाइन पर यात्री ट्रेन बदल सकेंगे। फेज चार और पांच (ए) में बन रहे मजेंटा लाइन के दो कॉरिडोर का निर्माण पूरा होने के बाद नबी करीम मेट्रो स्टेशन अपने तरह का यह अनूठा इंटरचेंज वाला स्टेशन बन जाएगा।

इस स्टेशन पर 32 सौ कार की क्षमता वाला पार्किंग क्षेत्र बनाया जाएगा। आमतौर पर इंटरचेंज स्टेशन दो अलग-अलग रंगों की लाइनों को जोड़ते हैं, लेकिन नबी करीम स्टेशन पर मजेंटा लाइन के ही दो अलग-अलग कॉरिडोर एक दूसरे को क्रास करेंगे। पहले स्तर पर यह जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम मार्ग-इंद्रप्रस्थ विस्तार का हिस्सा होगा।

**मजेंटा लाइन के विस्तार का भी हिस्सा होगा**

इसके साथ ही यह स्टेशन इंदरलोक से इंद्रप्रस्थ तक होने वाले मजेंटा लाइन के विस्तार का भी हिस्सा होगा। इस तरह बाटनिकल गार्डन से जनकपुरी पश्चिम, आरके आश्रम, इंद्रप्रस्थ होते हुए इंदरलोक तक के पूरे रूट में नबी करीम स्टेशन दो बार आएगा। यह एक अनूठा इन-लाइन इंटरचेंज होगा। बॉटनिकल गार्डन की तरफ से आने वाले यात्री यहां उतरकर इंद्रलोक या शिवाजी स्टेडियम पहुंच सकते हैं।

वहीं, इसी तरह इंद्रलोक के यात्री यहां पर ट्रेन बदल बाटनिकल गार्डन की तरफ यात्रा कर सकेंगे। 11.9 किमी लंबा इंद्रप्रस्थ-इंद्रलोक कॉरिडोर को पहले ग्रीन लाइन का (कीर्ति नगर/इंद्रलोक से ब्रिगेडियर होशियार सिंह) का विस्तार में शामिल किया गया था। डीएमआरसी ने इसे बदलकर मजेंटा लाइन (बॉटनिकल गार्डन से जनकपुरी पश्चिम) के विस्तार में शामिल किया है।

**चार मंजिल भूमिगत और आठ मंजिल ऊपर होगा स्टेशन**

**दिल्ली मेट्रो मजेंटा लाइन - सबसे लंबा कारिडोर (लाइन 8)**

| सेक्शन | स्थिति | लंबाई (किमी) |
|---|---|---|
| बाटनिकल गार्डन - जनकपुरी पश्चिम - कृष्णा पार्क | चालू | 39.271 |
| कृष्णा पार्क से आरके आश्रम | निर्माणाधीन | 27.93 |
| इंद्रप्रस्थ - इंदरलोक कारिडोर | प्रस्तावित | 11.9 |
| आरके आश्रम मार्ग - इंद्रप्रस्थ कारिडोर | प्रस्तावित | 9.913 |
| | कुल लंबाई | 89 |

डीएमआरसी का कहना है कि नबी करीम मेट्रो स्टेशन आधुनिक इंजीनियरिंग का बेजोड़ नमूना होगा। पूरा मेट्रो स्टेशन परिसर लगभग 26,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला होगा। यह भूमिगत और भूमि के ऊपर दो हिस्सों में स्टेशन परिसर बंटा हुआ होगा। चार मंजिल भूमिगत होंगे।

वहीं, जमीन के ऊपर आठ मंजिल का भवन होगा। ऊपर की दो मंजिलों का उपयोग व्यावसायिक गतिविधियों के लिए किया जाएगा। शेष मंजिलों पर पार्किंग की सुविधा होगी, जिसमें लगभग 32 सौ कारें खड़ी हो सकेंगी। मेट्रो स्टेशन के ऊपर विकसित होने वाली इन सुविधाओं के लिए डीएमआरसी और दिल्ली नगर निगम के बीच एक समझौता हुआ है।

# दिल्ली में रविवार को घूमने का है प्लान तो इन रास्तों पर जानें से बचें, ट्रैफिक रहेगा प्रभावित; एडवाइजरी जारी

रविवार को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 'रन फार गुड मैराथन' के कारण सुबह 5 बजे से 9:30 बजे तक दिल्ली का ट्रैफिक प्रभावित रहेगा। ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर यात्रियों से वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने और प्रभावित क्षेत्रों से बचने की अपील की है। लोधी रोड और आसपास के इलाकों में यातायात डायवर्जन लागू रहेगा, जिससे जाम की स्थिति बन सकती है। भारी वाहनों के आवागमन पर भी प्रतिबंध रहेगा।

**नई दिल्ली।** मैराथन दौड़ के कारण रविवार सुबह करीब साढ़े 4 घंटे तक जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम व उसके आसपास का ट्रैफिक प्रभावित रहेगा। ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर सुबह निकलने वाले लोगों से अपील की है कि वह योजना बना कर निकलें और इस रूट पर गुजरने से बचें नहीं तो उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

एडवाइजरी के मुताबिक, रविवार को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाली 'रन फॉर गुड मैराथन' के मद्देनजर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने विशेष ट्रैफिक व्यवस्था लागू की है। इस दौरान दक्षिण दिल्ली के कुछ मार्गों पर ट्रैफिक को नियंत्रित किया जाएगा और लोधी रोड और आसपास के इलाकों में जाम की स्थिति बन सकती है।

**इन मार्गों पर रहेगा ट्रैफिक डायवर्जन**

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, रविवार सुबह 5:00 बजे से 9:30 बजे तक विशेष ट्रैफिक व्यवस्था लागू रहेगी। इस दौरान मेहरचंद मार्केट सिग्नल, कोटला रेड लाइट, सेकेंड एवेन्यू- जोर बाग क्रासिंग, फोर्थ एवेन्यू- जोर बाग क्रॉसिंग और लाला लाजपत राय कट- सीबीआई बिल्डिंग के पास ट्रैफिक डायवर्जन लागू रहेगा। इसके अलावा निर्धारित समय के दौरान जेएलएन स्टेडियम रेड लाइट से बी.पी. मार्ग तक भारी गाड़ियों के आवागमन पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा।

ट्रैफिक पुलिस ने यात्रियों और गाड़ी चालकों से अपील की है कि वे अपनी यात्रा की पहले से योजना बनाएं, जेएलएन स्टेडियम और आसपास के प्रभावित मार्गों से बचें तथा जहां संभव हो वैकल्पिक मार्गों या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

# आज का साइबर सुरक्षा विचार : भारत का DPDP फ्रेमवर्क और नागरिकों की गोपनीयता: गैर-डिजिटल डेटा का अंधा क्षेत्र जो डिजिटल विभाजन को गहरा कर रहा है

**1. गैर-डिजिटल डेटा को शामिल नहीं करना**

- DPDP अधिनियम, 2023 और नियम, 2025 केवल डिजिटल व्यक्तिगत डेटा पर लागू होते हैं।
- अस्पतालों, बैंकों, स्कूलों और सरकारी कार्यालयों की फाइलें व रजिस्टर इसके दायरे से बाहर हैं।
- परिणामस्वरूप, लाखों नागरिकों के गोपनीयता अधिकार असुरक्षित रहते हैं।

**2. डिजिटल विभाजन और असमानता**

- ग्रामीण क्षेत्रों और सार्वजनिक सेवाओं में अभी भी मैनुअल रिकॉर्ड-कीपिंग पर निर्भरता है।
- गैर-डिजिटल डेटा को बाहर रखकर कानून कमजोर वर्गों को गोपनीयता सुरक्षा से वंचित करता है।

**3. कानूनी सुरक्षा का विखंडन**

- पुराने SPDI नियम, 2011 (Reasonable Security Practices and Procedures and Sensitive Personal Data or Information Rules, 2011) संवेदनशील व्यक्तिगत डेटा को व्यापक रूप से कवर करते थे।
- DPDP फ्रेमवर्क डिजिटल सुरक्षा को आधुनिक बनाता है, लेकिन गैर-डिजिटल संदर्भों में निरंतरता छोड़ देता है।
- इससे संस्थानों में भ्रम और असमान प्रवर्तन पैदा होता है।

**4. संचालन संबंधी चुनौतियाँ**

- स्वास्थ्य क्षेत्रः ग्रामीण क्लीनिकों की मरीज फाइलें असुरक्षित।
- बैंकिंगः पासबुक आधारित खाते और मैनुअल लेजर बाहर।
- शिक्षाः छात्र रजिस्टर कवर नहीं होते।
- संस्थानों को दोहरी अनुपालन का बोझ उठाना पड़ता है।

**5. कमज़ोर प्रवर्तन तंत्र**

- DPDP फ्रेमवर्क डिजिटल सहमति और शिकायत निवारण प्रणाली पर निर्भर है।
- जिन नागरिकों के पास डिजिटल साक्षरता या पहुँच नहीं है, वे अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर सकते।
- इससे के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ में मान्यता प्राप्त संवैधानिक गोपनीयता अधिकार कमजोर पड़ते हैं।

**नागरिकों पर प्रभाव**

- गोपनीयता शून्यः भौतिक रिकॉर्ड वाले नागरिकों के पास कोई लागू अधिकार नहीं।
- संस्थागत भ्रमः दोहरी अनुपालन से अक्षमता बढ़ती है।
- बहिष्कारः कमजोर वर्ग गोपनीयता सुरक्षा से बाहर रहते हैं।
- कानूनी असंगतिः भारत वैश्विक मानकों (जैसे GDPR) से पीछे रह जाता है।

**नागरिक-केंद्रित सुधार सुझाव**

- दायरा बढ़ाएँः DPDP को गैर-डिजिटल व्यक्तिगत डेटा तक विस्तारित करें।
- हाइब्रिड अनुपालन मॉडलः डिजिटल और भौतिक रिकॉर्ड पर समान गोपनीयता मानक लागू हों।
- क्षमता निर्माणः ग्रामीण व पुराने संस्थानों को सुरक्षित डिजिटल प्रणाली अपनाने के लिए प्रशिक्षित करें।
- नागरिक सशक्तिकरणः शिकायत निवारण तंत्र को गैर-डिजिटल उपयोगकर्ताओं के लिए भी सुलभ बनाना चाहिए।

**संक्षेप में:**

DPDP फ्रेमवर्क डिजिटल गोपनीयता को आधुनिक बनाता है, लेकिन गैर-डिजिटल रिकॉर्ड के लिए खतरनाक अंधा क्षेत्र छोड़ देता है। इस कमी को दूर करना भारत में सभी नागरिकों के लिए संवैधानिक गोपनीयता अधिकार सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

# राष्ट्रीय लोक अदालत में 18,869 मामलों का आपसी सहमति से निपटारा

परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 14 मार्च।** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण तथा हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजकुमार यादव के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, झज्जर द्वारा झज्जर और बहादुरगढ़ में राष्ट्रीय लोक अदालत का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस संबंध में जानकारी देते हुए सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि लोक अदालत का आयोजन फिजिकल मोड में किया गया, जिसमें झज्जर व बहादुरगढ़ की सभी राजस्व एवं न्यायिक अदालतों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त पीएलए/पीयूएस कोर्ट में भी लोक अदालत का आयोजन किया गया, जिसमें 07 लंबित मामलों का निपटारा किया गया।

उन्होंने बताया कि ट्रैफिक शाखा द्वारा लंबित चालान मामलों में से 7,953 मामलों का समाधान किया गया, वहीं राजस्व अधिकारियों द्वारा 8,622 मामलों का निपटारा किया गया। इस लोक अदालत में कुल 23,368 मामले रखे गए थे, जिनमें से 18,869 मामलों का आपसी सहमति से निपटारा किया गया। इन मामलों में कुल 2 करोड़ 68 लाख 80 हजार 734 रुपये की राशि से संबंधित समझौते किए गए।

लोक अदालत के दौरान प्रिंसिपल जज फैमिली कोर्ट प्रवीण कुमार लाल, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुखप्रीत सिंह, सिविल जज (सीनियर डिवीजन) मीनू, अतिरिक्त सिविल जज (जूनियर डिवीजन) विनीत कुमार तथा अतिरिक्त सिविल जज (जूनियर डिवीजन) सुमन की अदालतों में भी मामलों का समाधान किया गया।

सीजेएम विशाल ने कहा कि लोक अदालत तेज़ी से न्याय प्राप्त करने का एक प्रभावी माध्यम है, जहां मामलों का निपटारा आपसी सहमति से किया जाता है, जिससे समय और धन दोनों की बचत होती है। उन्होंने आम जनता से अपील की कि वे लोक अदालतों का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

उन्होंने लोक अदालत के सफल संचालन में सहयोग देने वाले पीठासीन अधिकारियों, कर्मचारियों, अधिवक्ताओं तथा जिला प्रशासन, पुलिस, बिजली विभाग सहित अन्य विभागों की सराहना की और सभी सहयोगी विभागों का धन्यवाद किया।

# सेवानिवृत राजस्व अधिकारियों से मांगे आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

लंबित तकसीम केसों का निपटारा करने के लिए रखे जाएंगे कॉन्ट्रैक्ट पर।

बहादुरगढ़ में भूमि विभाजन मामलों के शीघ्र निपटान के लिए सेवानिवृत राजस्व अधिकारियों से आवेदन आमंत्रित

संयुक्त खातेदारी वाले मामलों में आपसी सहमति से समाधान कराने के लिए संविदा आधार पर की जाएगी नियुक्ति

**बहादुरगढ़ 14 मार्च।** उपमंडल बहादुरगढ़ में लंबित भूमि विभाजन (तकसीम) मामलों के त्वरित निपटान के लिए प्रशासन द्वारा महत्वपूर्ण पहल की गई है। इस संबंध में अभिनव सिवाच, कलेक्टर एवं उपमंडल अधिकारी (नागरिक) बहादुरगढ़ की अदालत द्वारा आदेश जारी किए गए हैं।

जारी आदेशों के अनुसार हरियाणा सरकार के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं वित्तायुक्त द्वारा जारी अर्ध-सरकारी पत्र के तहत संयुक्त खातेदारी वाले भूमि मालिकों के बीच अनिवार्य विभाजन से संबंधित संशोधित धारा 111 ए को प्रभावी रूप से लागू करने तथा लंबित भूमि विभाजन मामलों के शीघ्र निपटान के लिए वैकल्पिक विवाद समाधान प्रणाली के माध्यम से कार्यवाही की जाएगी। इस व्यवस्था के अंतर्गत भूमि विभाजन मामलों में आपसी सहमति के आधार पर समाधान कर मुकदमों की संख्या कम करने और लंबित मामलों के त्वरित निपटान के उद्देश्य से सेवानिवृत राजस्व अधिकारियों को संविदा आधार पर नियुक्त करने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। ये अधिकारी भूमि मालिकों के बीच सहमति बनाकर मामलों के निपटान में सहयोग करेंगे।

उपमंडल बहादुरगढ़ क्षेत्राधिकार के अंतर्गत इच्छुक सेवानिवृत राजस्व अधिकारी अपना आवेदन इस न्यायालय में 18 मार्च 2026 तक प्रस्तुत कर सकते हैं। साथ ही इच्छुक अधिकारी न्यायालय में उपस्थित होकर नियुक्ति से संबंधित नियम व शर्तों का अवलोकन भी कर सकते हैं। एसडीएम ने कहा कि इस पहल से लंबित भूमि विभाजन मामलों के निपटान में तेजी आएगी और भूमि संबंधी विवादों में कमी लाने में सहायता मिलेगी।

# राष्ट्रीय लोक अदालत में जिला कारागार के बंदियों के उत्पादों की लगीं प्रदर्शनी

**गोरखपुर।** शनिवार को जनपद न्यायालय गोरखपुर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया।इस अवसर पर जिला कारागार गोरखपुर के बंदियों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की प्रदर्शनी व बिक्री के लिए लगाए गए स्टॉल का उद्घाटन न्यायाधीश राजेश्वर सिंह ने किया। कार्यक्रम में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सुचेता चौधरी सहित अन्य न्यायिक अधिकारी भी उपस्थित रहे। बंदियों द्वारा निर्मित टेराकोटा के उत्पादों को न्यायाधीश, न्यायिक अधिकारियों तथा दर्शकों ने काफी सराहा।स्टॉल के संचालन की जिम्मेदारी बंदीरक्षक प्रेमनाथ यादव व चौकीदार जितेंद्र सिंह ने संभाली। प्रदर्शनी में करीब 50,600 रुपये मूल्य के नेकलेस, "सत्यमेव जयते" तथा अशोक लॉट जैसे उत्पादों की बिक्री हुई।

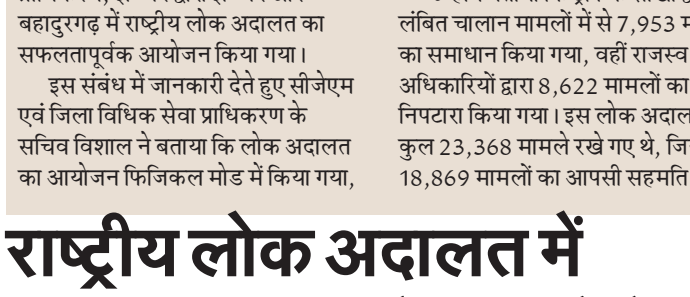

# फार्मर आईडी बनवाना सुनिश्चित करें किसान : उपायुक्त

## पीएम किसान सम्मान निधि सहित कृषि योजनाओं के लिए फार्मर आईडी होगी अनिवार्य

परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 14 मार्च।** उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने डिजिटल एग्री स्टैक के तहत फार्मर आईडी बनाने के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना सहित विभिन्न कृषि योजनाओं का लाभ फार्मर आईडी के माध्यम से ही प्रदान किया जाएगा, इसलिए जिले का कोई भी पात्र किसान इस प्रक्रिया से वंचित नहीं रहना चाहिए।

उपायुक्त ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा डिजिटल एग्री स्टैक अभियान को मिशन मोड में लागू किया गया है और सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस महत्वपूर्ण कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और निर्धारित समय सीमा के भीतर लक्ष्य प्राप्त करना सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक किसान की फार्मर आईडी भविष्य में कृषि क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण डिजिटल पहचान के रूप में कार्य करेगी। इसी आईडी के आधार पर किसानों को सब्सिडी, सरकारी योजनाओं, अनुदानों, फसल बीमा, ऋण सुविधाओं सहित विभिन्न सेवाओं का लाभ पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से मिल सकेगा। बिना फार्मर आईडी के किसानों को इन योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है।

उपायुक्त ने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में केंद्र सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके तहत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में प्रदान की जाती है। फार्मर आईडी बनने से लाभार्थियों की पहचान अधिक सटीक होगी और योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता भी बढ़ेगी।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गांव-गांव विशेष शिविर आयोजित कर किसानों को फार्मर आईडी के महत्व के बारे में जागरूक किया जाए तथा मौके पर ही उनकी आईडी तैयार की जाए। साथ ही तकनीकी अथवा दस्तावेज संबंधी किसी भी समस्या का तुरंत समाधान किया जाए, ताकि अभियान की गति प्रभावित न हो और अधिक से अधिक किसानों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

# बैंक खाते का दुरुपयोग करने वाले चार आरोपी हुए गिरफ्तार

परिवहन विशेष न्यूज

**गोरखपुर।** खोराबर पुलिस ने बैंक खाते का दुरुपयोग कर धोखाधड़ी करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से 10 मोबाइल फोन, 2 सिम कार्ड, पासबुक, एटीएम कार्ड और एटीएम स्लीप सहित अन्य सामान बरामद किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर, पुलिस अधीक्षक नगर के मार्गदर्शन तथा क्षेत्राधिकारी कैंट के पर्यवेक्षण में थानाध्यक्ष खोराबर सुधांशु सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम ने थाना खोराबार पर दर्ज मुकदमा संख्या 90/26 धारा 318(4), 3(5) बीएनएस व 66-डी आईटी एक्ट से जुड़े मामले में कार्रवाई करते हुए चार अभियुक्तों को गिरफ्तार किया।गिरफ्तार आरोपियों में वंश निषाद ,शोभित गौड़ , शक्ति जायसवाल और शिवम पटवा

शामिल हैं। पुलिस के अनुसार 12 मार्च 2026 को एक महिला ने तहरीर देकर आरोप लगाया था कि उसके परिचित शक्ति जायसवाल ने अपने साथी शिवम पटवा के साथ मिलकर उसे सरकारी कल्याणकारी योजना के तहत धनराशि और सिलाई मशीन दिलाने का झांसा दिया। आरोपियों ने बैंक में खाता खुलवाने के नाम पर उसका आधार कार्ड और पैन कार्ड ले लिया। बाद में उन्हीं दस्तावेजों के आधार पर सिम कार्ड जारी कराकर बैंक खाता खुलवाया और पासबुक व एटीएम कार्ड अपने पास रख लिया। इसके बाद महिला के खाते का दुरुपयोग करते हुए लाखों रुपये का लेन-देन किया गया। मामले की जांच के बाद पुलिस ने चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 10 मोबाइल फोन, 2 सिम कार्ड, एक पासबुक, एक एटीएम कार्ड और तीन एटीएम स्लीप बरामद किए हैं। पुलिस आरोपियों के खिलाफ आगे की विधिक कार्रवाई कर रही है।

# फजलगंज में भी सफल इंस्पेक्टर संजय सिंह की परिश्रम पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा, शातिर गांजा तस्कर गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

**कानपुर।** यहां अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले फजलगंज पुलिस ने एक शातिर मादक पदार्थ तस्कर अपराधी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली।

पुलिस के अनुसार गोविन्द नगर पुल के नीचे से कन्टेनर यार्ड की तरफ जा जाते समय गिरफ्तार किए गये ग्राम गुडनपुर तहसील खागा थाना सुल्तानपुर घोस जिला फतेहपुर के मूल निवासी और वर्तमान में फजलगंज थाना क्षेत्र के जसपाल सिंह का गैराज गुरूनानक मार्केट के सामने रहने वाले इस शातिर तस्कर सत्यनारायण साहू उर्फ सत्तू पुत्र परमेश्वर के पास से 505 ग्राम नाजायज गांजा भी बरामद किया गया है।

**अवगत कराते चलें कि इस शातिर गांजा तस्कर**

सत्यनारायण साहू उर्फ सत्तू को गिरफ्तार करने के रूप में जिस थाना फजलगंज पुलिस को यह महत्व पूर्ण सफलता मिली आजकल उसकी कमान हर तरह के अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले तेजतर्रार, व्यवहार कुशल प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर संजय सिंह के हाथ में है।

सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए अपनी जुझारू नौकरी के अबतक कार्यकाल में अनेक अपराधियों को जेल की हवा खिला चुके जुझारू इंस्पेक्टर संजय सिंह के अब तक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन उन्होंने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया।

इसी के साथ सरल और शालीन स्वभाव के इंस्पेक्टर संजय सिंह की कार्यशैली भी संभ्रांत असहाय लोगों की हितरक्षक और बहुत मैत्रीपूर्ण भी मानी जाती है ,जिसके अनुरूप ही वह जहां उचित पात्र लोगों की हर संभव सहायता करते हैं। वहीं कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ शठे शाठ्यम समाचरेत वाली कहावत चरितार्थ करने से भी नहीं चूकते। यही वजह है कि अपने विभागीय कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करने वाले लोकप्रिय कार्यशैली के जुझारू तेवरों वाले इंस्पेक्टर संजय सिंह की कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उनकी जुझारू नौकरी के अब तक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में भी सफल हो चुकी है।

पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल के आदेशानुसार अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में सेंट्रल के डीसीपी अतुल कुमार श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन और स्वरूप नगर के एसीपी आईपीएस सुमित सुधाकर रामटेके के पर्यवेक्षण में

मुखबिर की सटीक सूचना पर इस तस्कर सत्यनारायण साहू उर्फ सत्तू को गिरफ्तार करने में सफलता तब मिली जब पीड़ितों के पक्ष में और अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई तथा विभिन्न जनपदों के अपने जुझारू कार्यकाल के दौरान इसके पहले भी घटनाओं का सटीक खुलासा करने के साथ हर तरह के अनेक शातिरों को जेल की हवा खिला चुके और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश निर्देशों का अक्षरशः पालन करने में भी अग्रणी फजलगंज के प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर संजय सिंह अपनी टीम के ई स्टेट चौकी प्रभारी उमाकान्त, मिल एरिया के चौकी प्रभारी पवन प्रताप, सब इंस्पेक्टर पंकज कुमार, अंकुश अग्रवाल, सचिन कशवाहा, विजय शंकर, कांस्टेबल विनोद कुमार और अवनीन्द्र दीक्षित आदि के साथ गश्त पर निकले हुए थे। अब पुलिस गिरफ्तार तस्कर सत्यनारायण साहू उर्फ सत्तू के सहयोगी साथियों को भी तलाश कर रही है।

सत्यनारायण साहू उर्फ सत्तू को गिरफ्तार करने के रूप में जिस थाना फजलगंज पुलिस को यह महत्व पूर्ण सफलता मिली आजकल उसकी कमान हर तरह के अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले तेजतर्रार, व्यवहार कुशल प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर संजय सिंह के हाथ में है।

# विशेषज्ञ चिकित्सकों ने दी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की सलाह

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर (पिपराईच)। समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शनिवार को पिपराईच क्षेत्र स्थित एक स्कूल परिसर में एक व्यापक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में क्षेत्र के बड़ी संख्या में ग्रामीणों, अभिभावकों तथा विद्यार्थियों ने पहुंचकर अपने स्वास्थ्य की जांच कराई और विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श प्राप्त किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य केवल रोगों की जांच करना ही नहीं था, बल्कि लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, संतुलित आहार लेने तथा सामान्य रोगों से बचाव के प्रति जागरूक करना भी था। शिविर में आए मरीजों की क्रमबद्ध रूप से जांच की गई और उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय सलाह प्रदान की गई। शिविर के दौरान बड़ी संख्या में आए लोगों की रक्तचाप (बीपी), शुगर तथा थायराइड जैसी बीमारियों की जांच की गई और जिन मरीजों में इन रोगों के लक्षण पाए गए उन्हें सावधानी बरतने तथा नियमित उपचार कराने की सलाह दी गई।चिकित्सकों ने लोगों को यह भी बताया कि

बदलती जीवनशैली, असंतुलित खानपान और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण आज मधुमेह, उच्च रक्तचाप और थायराइड जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, इसलिए समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराना अत्यंत आवश्यक है। शिविर के दौरान चिकित्सकों ने उपस्थित लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और पौष्टिक भोजन लेने के महत्व के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. ए. के. पाण्डेय ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आजकल फास्ट फूड और जंक फूड का अत्यधिक सेवन लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने कहा कि यदि लोग अपने दैनिक जीवन में संतुलित और पौष्टिक भोजन को शामिल करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें तो कई गंभीर बीमारियों से आसानी से बचा जा सकता है। उन्होंने अभिभावकों से विशेष रूप से अपील की कि वे अपने बच्चों को घर का बना पौष्टिक भोजन दें और उन्हें बाहर की खुली तथा अस्वच्छ खाद्य वस्तुओं से दूर रखें। शिविर के दौरान बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें चिकित्सकों और शिक्षकों ने विद्यार्थियों को बताया कि बाहर मिलने वाली अस्वच्छ खाद्य सामग्री के सेवन से पेट संबंधी कई बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। विद्यार्थियों को यह भी समझाया गया कि स्वस्थ रहने के लिए नियमित दिनचर्या, संतुलित आहार, पर्याप्त पानी और शारीरिक गतिविधियां अत्यंत आवश्यक हैं। विशेषज्ञों ने बच्चों को दिनभर में कम से कम पांच बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पौष्टिक भोजन करने की सलाह दी, जिससे शरीर को निरंतर ऊर्जा मिलती रहे और स्वास्थ्य बेहतर बना रहे।कार्यक्रम के दौरान डॉ. राम प्रताप विश्वकर्मा, धर्मेंद्र पटवा सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे और सभी ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

# अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के सुअवसर पर आयोजित "नारी शक्ति गौरव महोत्सव – 2026 में देशभर की 31 महिलाओं का सम्मान"

परिवहन विशेष न्यूज

महिला सशक्तिकरण और समाज में उत्कृष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित करने के उद्देश्य से *ज्ञानशक्ति सेवा फाउंडेशन द्वारा आयोजित "नारी शक्ति गौरव महोत्सव – 2026" का गरिमामय आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम डॉ. परमानन्द शुक्ल (डायरेक्टर / संस्थापक / राष्ट्रीय अध्यक्ष) की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आर.जे. संतोष राव (ऑल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी) उपस्थित रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती किरन शर्मा (डायरेक्टरेट जनरल ऑफ होमगार्ड्स दिल्ली एवं मुख्य समाचार वाचिका – ऑल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी) ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि आर.जे. संतोष राव ने कहा कि समाज में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि ऐसे सम्मान समारोह महिलाओं के उत्कृष्ट कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

विशिष्ट अतिथि श्रीमती किरन शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि आज की महिला शिक्षा, प्रशासन, मीडिया और सामाजिक सेवा सहित अनेक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है। उन्होंने सभी सम्मानित महिलाओं को बधाई देते हुए उनके योगदान को प्रेरणादायी बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ज्ञानशक्ति सेवा फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. परमानन्द शुक्ल ने कहा कि महिलाओं के योगदान को सम्मानित करना केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरणा देने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि "नारी शक्ति गौरव महोत्सव" का उद्देश्य समाज में उल्लेखनीय कार्य कर रही महिलाओं को मंच प्रदान करना और उनके प्रयासों को सम्मानित करना है।

इस अवसर पर "नारीशक्ति" पुस्तक की भी चर्चा की गई, जिसमें महिला सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता और प्रेरक विचारों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है।

कार्यक्रम के दौरान सम्मानित सभी महिलाओं ने भी अपने विचार और अनुभव साझा किए। उपस्थित अतिथियों डॉ॰ हरीश मिश्रा, डॉ॰ केडु अरुणाचलम्, डॉ॰ शैलेंद्र मिश्र, डॉ॰ योगेश्वर दुबे, कवि अमानी कुरैशी, विश्वरंजन त्रिपाठी, डॉ. सुरेश द्विवेदी, डॉ॰ सोमेश द्विवेदी सहित सभी प्रतिभागियों नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, गुजरात युनिवर्सिटी, दिल्ली यूनिवर्सिटी की डॉ॰ कामिनी रावत, संदीप यूनिवर्सिटी मुंबई , द हिन्दू के उपाध्यक्ष रामानुजम जी, हरिमोहन गुप्ता, अशोक गुप्ता ने सभी सम्मानित महिलाओं को बधाई दी और उनके कार्यों की सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय उद्घोषिका श्रीमती स्नेह लता ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया।

**सम्मानित महिलाएँ:**

1. सुनीता चंदना – नारी शक्ति सम्मान 2026
2. सविता कुमार – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
3. राखी बंसल – नारी शक्ति सम्मान 2026
4. स्वीटी उल्लास – ग्लोबल वुमन ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2026
5. सरोज बाला – वुमन एक्सीलेंस अवार्ड 2026
6. सोनिया दुबे – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
7. शेख परवीन जाहिद – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
8. मधु शर्मा – ग्लोबल वुमन ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2026
9. श्रीमती विजय लक्ष्मी त्रिपाठी – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
10. सुरेखा गजानन दाखरे – इंटरनेशनल वुमन लीडरशिप अवार्ड 2026
11. रितु सिन्हा – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
12. सुनीता नयाल – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
13. श्रीमती तारा नौडियाल – नारी शक्ति सम्मान 2026
14. श्रीमती अनुराधा राजपुरोहित – नारी गौरव रत्न सम्मान 2026
15. गुड़िया देवी – नारी शक्ति सम्मान 2026
16. रूपा श्रीवास्तव – नारी शक्ति सम्मान 2026
17. पूजा रानी – नारी शक्ति सम्मान 2026
18. डॉ. इन्दु लेखा श्रीवास्तव – ग्लोबल वुमन ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2026
19. राजलक्ष्मी आर – नारी शक्ति सम्मान 2026
20. सुश्री शिल्पा संगा – नारी शक्ति सम्मान 2026
21. अल्का शाक्य – नारी शक्ति सम्मान 2026
22. नीतू मिश्रा – नारी शक्ति सम्मान 2026
23. किरण शर्मा – इंटरनेशनल नारी गौरव अवार्ड 2026
24. स्नेह लता – नारी शक्ति सम्मान 2026
25. मीना गुप्ता – ग्लोबल वुमन ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2026
26. रोशनी – इंटरनेशनल नारी गौरव अवार्ड 2026
27. सुनीता – शक्ति स्वरूपा सम्मान 2026
28. वंदना अवस्थी – महिला उत्कर्ष अवार्ड 2026
29. मनजीता अहिरवार – नारी शक्ति सम्मान 2026
30. डॉ. स्मिता प्रभाकर पिसे – ग्लोबल वुमन ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2026
31. श्रीमती कविता ममगाई – इंटरनेशनल नारी गौरव अवार्ड 2026

कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया तथा सम्मानित महिलाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

संस्था हर क्षेत्र से जुड़े हुए हर तरह के शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सामाजिक कार्य, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता, कौशल विकास योजना, स्किल डिवेलपमेंट के लिए निरंतर कार्य करती रहती है एवं इन सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को समय समय पर प्रोत्साहित एवं सम्मानित करती रहती है।

## बच्चों की कलम से

# क्या आपको भी क्रिकेट पसंद है मेरी तरह?

अथर्व पटौदिया
ब्राइटन इंटरनेशनल स्कूल
रायपुर

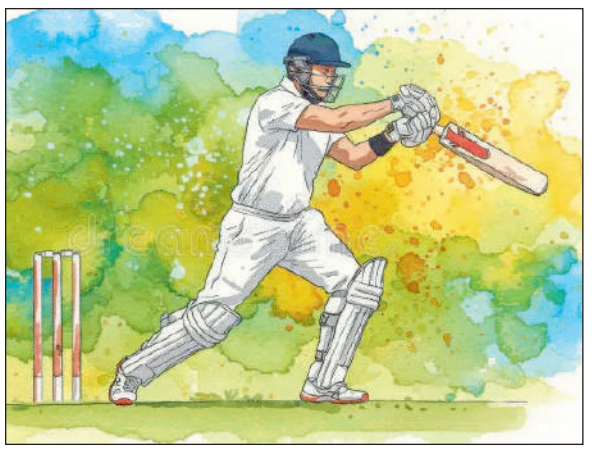

आखिर क्रिकेट है क्या? कुछ लोगों के लिए यह खेल होगा, तो कुछ लोगों के लिए रोजी-रोटी, तो किसी के लिए एक इमोशन। यह हर आयु के लोगों को पसंद आता है। एक ही छत के नीचे एक बच्चा, एक जवान, एक बूढ़ा सभी बैठते हैं क्रिकेट के रोमांच के लिए। यह खेल इंग्लैंड का राष्ट्रीय खेल है। यह भारत के गिल्ली डंडे के जैसा भी लगता है। इसमें कुल ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इसे खेलने के लिए हमें एक बल्ला और गेंद चाहिए होती है। एक विशाल गोलाकार मैदान के बीच बनी पिच पर इसे खेला जाता है। पिच को हर मैच के पहले रोल किया जाता है। भारत में तो लोग रोड पर भी क्रिकेट खेलते दिख जाएँगे। अब क्या कहूँ यही है हमारा भारत।

क्रिकेट में भारत कहीं भी पीछे नहीं। विश्व में जिसे बैटिंग का सरताज कहा जाता है वह भी एक भारतीय ही है- सचिन तेंदुलकर। दुनिया में लाखों बैट्समैन हुए हैं परंतु सचिन तेंदुलकर जैसा कोई नहीं। इस बात को तो पूरी दुनिया मानती है। जब सचिन सिर्फ तेरह साल के थे तब उन्होंने क्रिकेट की दुनिया में कदम रख लिया था। उन्होंने अपना पहला मैच पाकिस्तान के खिलाफ खेला था। उस समय की सबसे खतरनाक टीम पाकिस्तान के तेजतर्रार गेंदबाजों से पूरी दुनिया घबराती थीं। शोएब अख्तर और वसीम अकरम तो जान ले लेने वाली गेंद फेंकते थे। शोएब अख्तर ने पता नहीं कितने बल्लेबाजों के हेलमेट और बल्ले तोड़े हैं पर सचिन तेंदुलकर ने अपने पहले ही मैच में शोएब का सामना किया था। गेंद सीधा जाकर नाक पर लगी खून से लथपथ चेहरे को देख सभी ने कहा कि वापस चले जाओ परंतु पट्टी लगाकर वापस खेलने खड़ा हो गया मात्र सोलह वर्ष का बच्चा और उसने मैच में क्या पारी खेली। सभी को अचंभित कर दिया। उनकी स्टेट-ड्राइव की तो पूरी दुनिया दीवानी है। सौ से भी ज्यादा शतक मारे हैं उन्होंने अपने पूरे करियर में, अगर मैं कहूँ तो मेरे मनपसंद बल्लेबाज तो विराट कोहली हैं। मेरे मनपसंद गेंदबाज ऑस्ट्रेलिया के ब्रेट ली हैं उनका एक्शन मैकेनिकली परफेक्ट था। आस्ट्रेलिया टीम के पुराने कप्तान रिकी पोंटिंग भी काबिले तारीफ थे।

पहले पचास ओवरों के मैच चलन में थे जिसमें आपको अपनी तकनीक सुधारनी पड़ती थी और धीरज से खेलना पड़ता था, परंतु आजकल बीस ओवर के मैच प्रचलन में है। बल्लेबाज मात्र बीस ओवर में करीब दो सौ पचास रन बना देते हैं, परंतु पहले तो पचास ओवर में भी दो सौ रन का एक बड़ा स्कोर होता था। आजकल की नई पीढ़ी तो पावर प्ले में विश्वास करती है यह सिर्फ एक खेल नहीं है यह कई लोगों के लिए की इमोशन की तरह है। यह हममें जोश लाता है। कभी-कभी तो दर्शक रो भी पड़ते हैं। यह खेल हमारे मानसिक और शारीरिक दोनों स्वास्थ को अच्छा रखता है। यह हममें धीरज और परफेक्शन लाता है इसलिए हमें इसके बारे में और जानना चाहिए। मैं खुद भी इस खेल से बहुत प्रभावित हूँ और मेरे जीवन में इससे कई छोटी-मोटी घटनाएँ जुड़ी है। आशा करता हूँ कि आप भी इस खेल को जरूर खेलना पसंद करेंगे मेरी तरह।

# जरूरतमंद लड़कियों को सिलाई मशीनें बांटी गईं

**मानसा/बुढलाडा: (राजेश सलूजा)**

समाजसेवी नाजर सिंह मानशाहिया ने संजीविनी वेलफेयर सोसाइटी बुढलाडा के साथ मिलकर जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों को सिलाई मशीनें बांटीं ताकि वे अपना काम शुरू कर सकें। इस मौके पर नाजर सिंह मानशाहिया ने कहा कि समाज में जरूरतमंदों की मदद करना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि सिलाई मशीनें देने का मकसद लड़कियों को अपने पैरों पर खड़ा करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। संजीवनी वेलफेयर सोसाइटी के सदस्यों ने कहा कि सोसाइटी समय-समय पर समाज सेवा के काम करती है और भविष्य में भी ऐसी गतिविधियां जारी रहेंगी। इस मौके पर लड़कियों और उनके परिवार वालों ने नाजर सिंह मानशाहिया और सोसाइटी का धन्यवाद किया। इस मौके पर सोसाइटी के चेयरपर्सन बलदेव कक्कड़ और डॉ. कृष्ण लाल और इलाके के दूसरे जाने-माने लोग भी मौजूद थे।

# ग़ज़ल संग्रह 'बिखरे हुए पर' के लिए डॉ. कविता विकास को 'साहित्य भूषण सम्मान'

**डॉ. शंभु पंवार नई दिल्ली, 14 मार्च।** बीपीए फाउंडेशन एवं इंडिया नेटबुक्स के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वार्षिक 'साहित्यकार सम्मान उत्सव' में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कविता विकास को उनके चर्चित ग़ज़ल संग्रह 'बिखरे हुए पर' के लिए प्रतिष्ठित 'साहित्य भूषण सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान शनिवार को होटल क्राउन प्लाजा, मयूर विहार डिस्ट्रिक्ट सेंटर, दिल्ली में आयोजित गरिमामय समारोह में प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. कविता विकास की इस ग़ज़ल पुस्तक को पूर्व में जयपुर साहित्य संगीति द्वारा भी अखिल भारतीय सम्मान प्राप्त हो चुका है। डॉ. कविता विकास हिंदी साहित्य जगत की प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। उनके कहानी, कविता, ग़ज़ल और निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं तथा वे अनेक पत्र-पत्रिकाओं के संपादन से भी जुड़ी रही हैं। साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा विभिन्न टीवी चैनलों पर भी वे समय-समय पर कविता पाठ और साहित्यिक चर्चाओं में सहभागिता करती रही हैं। इंडिया नेटबुक्स के सीईओ डॉ. संजीव कुमार और श्रीमती मनोरमा के संयोजन में आयोजित इस समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार बलदेव भाई, सुरेन्द्र मोहन पाठक, श्याम सखा श्याम, ममता कालिया, बुद्धिनाथ मिश्र, गिरीश पंकज, संतोष चौबे सहित देशभर की अनेक साहित्यिक विभूतियाँ उपस्थित रहीं। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि ऐसे आयोजन साहित्य सृजन को नई ऊर्जा देते हैं और रचनाकारों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान शिक्षा क्षेत्र से जुड़े साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया।

# सफदरजंग अस्पताल में आईसीयू मरीजों के लिए विशेष फॉलो-अप क्लिनिक की शुरुआत

## देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र में पहली पहल,आईसीयू से डिस्चार्ज मरीजों की पोस्ट-क्रिटिकल केयर पर रहेगा खास फोकस

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

**नई दिल्ली:** दिल्ली स्थित सफदरजंग अस्पताल ने स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आईसीयू से डिस्चार्ज हुए मरीजों के लिए एक समर्पित क्रिटिकल केयर फॉलो-अप क्लिनिक की शुरुआत की है। यह पहल भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र में अपनी तरह की पहली सेवा मानी जा रही है, जिसका उद्देश्य गंभीर बीमारी से उबर चुके मरीजों को अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी बेहतर चिकित्सा मार्गदर्शन और निगरानी उपलब्ध कराना है।इस नई सेवा को सरकार के टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म ई-संजीवनी के माध्यम से संचालित किया जाएगा। इसके जरिए मरीज और उनके परिजन घर बैठे ही क्रिटिकल केयर विशेषज्ञों से ऑनलाइन परामर्श ले सकेंगे। अस्पताल प्रशासन के अनुसार यह क्लिनिक हर मंगलवार और गुरुवार सुबह 10 से 11 बजे के बीच संचालित होगा।

अस्पताल के क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग के प्रमुख डॉ. अनिर्बन होम चौधरी ने बताया कि भारत में आईसीयू से ठीक होकर घर लौटने वाले कई मरीजों को लंबे समय तक शारीरिक कमजोरी, मानसिक थकान, याददाश्त में कमी, सांस संबंधी दिक्कतें और अन्य जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन देश में अब तक इन मरीजों के लिए व्यवस्थित पोस्ट-आईसीयू फॉलो-अप सेवाएं बहुत सीमित रही हैं।

उन्होंने कहा कि इस नई पहल का उद्देश्य उन मरीजों को निरंतर चिकित्सा सहायता देना है जो आईसीयू में इलाज के बाद भी पूरी तरह सामान्य जीवन में लौटने के लिए अतिरिक्त मार्गदर्शन और उपचार की आवश्यकता महसूस करते हैं। टेलीमेडिसिन के जरिए मरीजों को बार-बार अस्पताल आने की जरूरत भी कम होगी, जिससे समय और संसाधनों दोनों की बचत होगी।इस महत्वपूर्ण पहल का उद्घाटन 14 मार्च को सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने किया। इस अवसर पर अस्पताल की मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. चारु बाम्बा भी मौजूद रहीं और उन्होंने इस पहल को मरीजों के लिए बेहद उपयोगी बताते हुए इसकी सराहना की।

इस कार्यक्रम में अस्पताल के सभी एडिशनल मेडिकल सुपरिटेंडेंट (ऐ एम एस) और क्रिटिकल केयर मेडिसिन टीम के सदस्य भी उपस्थित रहे। अस्पताल प्रशासन का मानना है कि यह पहल भविष्य में देश के अन्य सरकारी अस्पतालों के लिए भी एक मॉडल बन सकती है और पोस्ट-आईसीयू केयर को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

# पार्थ दादा पवार के पंजाब आगमन को लेकर NCP की अहम बैठक, संगठन को मजबूत करने पर मंथन

मोहाली जिला प्रधान ज्योतिष आचार्य सरदार बख्शीश सिंह बावा बोले – पार्थ दादा पवार के आगमन से पंजाब में एनसीपी को मिलेगा नया बल

परिवहन विशेष न्यूज

**हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा):** राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) के नवनिर्वाचित राज्यसभा सदस्य तथा स्व. अजितदादा पवार के सुपुत्र पार्थ दादा पवार के पंजाब आगमन की तैयारियों को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। यह बैठक पंजाब–चंडीगढ़ राज्य पर्यवेक्षक मतीन कामले की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें पार्टी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बैठक में रईसा कामले, स. सरबजीत सिंह गोल्डी (एनसीपी पंजाब प्रधान), आकाशदीप सिंह (एनवायसी युवा पंजाब प्रधान), चंद्र शेखर (प्रदेश महामंत्री), एडवोकेट स. सब्नावाल (प्रदेश महामंत्री), स. लवप्रीत भल्ला (प्रदेश सचिव – युवा NYC सेल), ज्योतिष आचार्य सरदार बख्शीश सिंह बावा (मोहाली जिला प्रधान), महिला राज्य उप-प्रधान मयूरी, मनिंदर कौर (मोहाली जिला अध्यक्षा महिला सेल), हल्का इंचार्ज रीटा, मोहाली इंडस्ट्रियल एरिया के प्रधान बलजीत सिंह, चंडीगढ़ से ज्योत्सना तथा निशा चव्हाण सहित कई अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान संगठन को और मजबूत करने के उद्देश्य से राकेश उर्फ बॉबी अरोड़ा को रूपनगर जिला प्रधान नियुक्त किया गया। इसके साथ ही पार्थ दादा पवार के प्रस्तावित पंजाब दौरे को लेकर संगठनात्मक तैयारियों और स्वागत कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी सौंपी गईं।

इस अवसर पर मोहाली जिला प्रधान ज्योतिष आचार्य सरदार बख्शीश सिंह बावा ने कहा कि पार्थ दादा पवार के पंजाब आगमन से कार्यकर्ताओं में नया उत्साह पैदा होगा और प्रदेश में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का संगठन और अधिक सशक्त होगा। बैठक के अंत में सभी पदाधिकारियों ने आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया।

# विशेषज्ञ चिकित्सकों ने दी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की सलाह

परिवहन विशेष न्यूज

**गोरखपुर (पिपराईच)।** समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शनिवार को पिपराईच क्षेत्र स्थित एक स्कूल परिसर में एक व्यापक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में क्षेत्र के बड़ी संख्या में ग्रामीणों, अभिभावकों तथा विद्यार्थियों ने पहुंचकर अपने स्वास्थ्य की जांच कराई और विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श प्राप्त किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य केवल रोगों की जांच करना ही नहीं था, बल्कि लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, संतुलित आहार लेने तथा सामान्य रोगों से बचाव के प्रति जागरूक करना भी था। शिविर में आए मरीजों की क्रमबद्ध रूप से जांच की गई और उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय सलाह प्रदान की गई। शिविर के दौरान बड़ी संख्या में आए लोगों की रक्तचाप (बीपी), शुगर तथा थायराइड जैसी बीमारियों की जांच की गई और जिन मरीजों में इन रोगों के लक्षण पाए गए उन्हें सावधानी बरतने तथा नियमित उपचार कराने की सलाह दी गई। चिकित्सकों ने लोगों को यह भी बताया कि बदलती जीवनशैली, असंतुलित खानपान और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण आज मधुमेह, उच्च रक्तचाप और थायराइड जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, इसलिए समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराना अत्यंत आवश्यक है। शिविर के दौरान चिकित्सकों ने उपस्थित लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और पौष्टिक भोजन लेने के महत्व के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. ए. के. पाण्डेय ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आजकल फास्ट फूड और जंक फूड का अत्यधिक सेवन लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने कहा कि यदि लोग अपने दैनिक जीवन में संतुलित और पौष्टिक भोजन को शामिल करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें तो कई गंभीर बीमारियों से आसानी से बचा जा सकता है। उन्होंने अभिभावकों से विशेष रूप से अपील की कि वे अपने बच्चों को घर का बना पौष्टिक भोजन दें और उन्हें बाहर की खुली तथा अस्वच्छ खाद्य वस्तुओं से दूर रखें। शिविर के दौरान बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें चिकित्सकों और शिक्षकों ने विद्यार्थियों को बताया कि बाहर मिलने वाली अस्वच्छ खाद्य सामग्री के सेवन से पेट संबंधी कई बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। विद्यार्थियों को यह भी समझाया गया कि स्वस्थ रहने के लिए नियमित दिनचर्या, संतुलित आहार, पर्याप्त पानी और शारीरिक गतिविधियां अत्यंत आवश्यक हैं। विशेषज्ञों ने बच्चों को दिनभर में कम से कम पांच बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पौष्टिक भोजन करने की सलाह दी, जिससे शरीर को निरंतर ऊर्जा मिलती रहे और स्वास्थ्य बेहतर बना रहे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. राम प्रताप विश्वकर्मा, धर्मेंद्र पटवा सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे और सभी ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

# सिमटते संसाधनों के बीच अक्षय ऊर्जा

● विजय गर्ग

आज का युग तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और विकास की बढ़ती जरूरतों का युग है। इन सबके कारण ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। लेकिन कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक ऊर्जा संसाधन सीमित हैं और तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। ऐसे समय में अक्षय ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण का एक महत्वपूर्ण विकल्प बनकर उभर रही है।

**पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की सीमाएँ**

वर्तमान समय में दुनिया की अधिकांश ऊर्जा जरूरतें जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, तेल और गैस से पूरी होती हैं। ये संसाधन लाखों वर्षों में बनते हैं और एक बार उपयोग हो जाने के बाद जल्दी दोबारा उपलब्ध नहीं होते।

इसके अलावा इन ईंधनों के उपयोग से वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। इसलिए ऊर्जा के ऐसे स्रोतों की आवश्यकता महसूस की जा रही है जो स्वच्छ भी हों और लंबे समय तक उपलब्ध भी रहें।

**अक्षय ऊर्जा क्या है**

अक्षय ऊर्जा ऐसे ऊर्जा स्रोतों को कहा जाता है जो प्रकृति में लगातार उपलब्ध रहते हैं और समाप्त नहीं होते। जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत और बायोमास ऊर्जा।

इन स्रोतों का उपयोग करने से पर्यावरण पर कम नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और ऊर्जा उत्पादन भी स्थायी तरीके से किया जा सकता है।

**भारत में अक्षय ऊर्जा की संभावनाएँ**

भारत भौगोलिक दृष्टि से अक्षय ऊर्जा के लिए अत्यंत उपयुक्त देश है। यहाँ वर्ष भर पर्याप्त धूप मिलती है, जिससे सौर ऊर्जा उत्पादन की बड़ी संभावनाएँ हैं। कई राज्यों में पवन ऊर्जा के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ भी मौजूद हैं। सरकार ने भी अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे राष्ट्रीय सौर मिशन , जिसके माध्यम से सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है।

**पर्यावरण और विकास में संतुलन**

अक्षय ऊर्जा का उपयोग केवल ऊर्जा संकट का समाधान ही नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों के उपयोग से प्रदूषण कम होता है और पृथ्वी के प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मदद मिलती है।

इसके साथ ही अक्षय ऊर्जा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर सकती है, जैसे सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना और रखरखाव।

**चुनौतियाँ और समाधान**

हालाँकि अक्षय ऊर्जा के कई लाभ हैं, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे प्रारंभिक लागत, तकनीकी ढांचा और ऊर्जा भंडारण की समस्या। लेकिन वैज्ञानिक शोध और नई तकनीकों के विकास के साथ इन चुनौतियों का समाधान धीरे-धीरे संभव हो रहा है।

**निष्कर्ष:** सिमटते प्राकृतिक संसाधनों और बढ़ती ऊर्जा मांग के इस दौर में अक्षय ऊर्जा ही भविष्य की राह दिखाती है। यह न केवल ऊर्जा की स्थायी आपूर्ति सुनिश्चित करती है, बल्कि पर्यावरण की रक्षा भी करती है। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, उद्योग और आम नागरिक मिलकर अक्षय ऊर्जा को अपनाएँ। तभी विकास और प्रकृति के बीच संतुलन बनाते हुए एक सुरक्षित और स्वच्छ भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# 15 मार्च कांशीराम जयंती विशेष : बहुजन चेतना के शिल्पी: कांशीराम

**कांशीराम का जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रूपनगर जिले में हुआ था, और उनका बचपन गरीबी और सामाजिक असमानताओं के बीच बीता। उन्होंने देखा कि समाज के कमजोर वर्ग शिक्षा और अवसर की कमी के कारण हमेशा पिछड़ते रहे। इन अनुभवों ने उनमें एक गहरी समझ और सामाजिक न्याय की चेतना को जन्म दिया।**

बाबूलाल नागा

15 मार्च का दिन भारतीय समाज के लिए हमेशा विशेष रहेगा क्योंकि इसी दिन एक ऐसे व्यक्तित्व का जन्म हुआ जिसने देश की सामाजिक और राजनीतिक समझ को गहराई से झकझोरा। कांशीराम केवल एक नेता नहीं थे, वे बहुजन समाज की जागरूकता और सशक्तिकरण के अद्वितीय प्रेरक थे। उनका जीवन और कार्य हमें यह सिखाते हैं कि समाज में समानता और न्याय के लिए निरंतर संघर्ष और संगठित प्रयास ही आवश्यक हैं।

कांशीराम का जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रूपनगर जिले में हुआ था, और उनका बचपन गरीबी और सामाजिक असमानताओं के बीच बीता। उन्होंने देखा कि समाज के कमजोर वर्ग शिक्षा और अवसर की कमी के कारण हमेशा पिछड़ते रहे। इन अनुभवों ने उनमें एक गहरी समझ और सामाजिक न्याय की चेतना को जन्म दिया। उनके विचारों की नींव डॉ. भीमराव आंबेडकर के आदर्शों से प्रेरित थी, जिन्होंने हमेशा वंचितों के अधिकार और समानता की बात की। कांशीराम ने यही समझा कि जब तक बहुजन समाज संगठित नहीं होगा, तब तक सत्ता में उसकी हिस्सेदारी केवल आकांक्षा ही रहेगी।

उनकी सामाजिक पहलें हमेशा सैद्धांतिक विचारों से आगे बढ़कर व्यावहारिक और परिणामोन्मुखी थीं। उन्होंने शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जागरूकता को समाज के सशक्तिकरण का सबसे बड़ा साधन माना। सरकारी नौकरियों और संस्थानों में संगठित प्रयासों के माध्यम से उन्होंने बहुजन समाज को यह विश्वास दिलाया कि उनका हक केवल मांगने से नहीं, बल्कि संगठित होकर उसे हासिल करने से सुनिश्चित होता है। उनका यह दृष्टिकोण केवल विरोध तक सीमित नहीं था, वे चाहते थे कि समाज के हर सदस्य को आत्मसम्मान और अधिकार मिले।

कांशीराम का जीवन संघर्ष और समर्पण की मिसाल है। उन्होंने दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्गों को यह सिखाया कि जागरूकता ही शक्ति है। उनका मानना था कि यदि समाज अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग हो जाए, तो कोई भी असमानता लंबे समय तक कायम नहीं रह सकती। उन्होंने हमेशा यह संदेश दिया कि केवल आक्रोश करना या विरोध करना पर्याप्त नहीं है; समाज को संगठित होकर रणनीतिक रूप से काम करना होगा।

उनकी दूरदर्शिता ने बहुजन समाज को नई पहचान दिलाई। उन्होंने अपने संगठनात्मक कौशल और सामाजिक समझ का प्रयोग करके समाज के

कमजोर वर्गों को उनके अधिकारों और सम्मान के लिए एक मंच दिया। उनके प्रयासों से लाखों लोग राजनीतिक और सामाजिक रूप से जागरूक हुए। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि समाज के पिछड़े वर्ग शिक्षा, नौकरी और सामाजिक अवसरों में पीछे न रहें, और उन्हें यह एहसास हो कि उनका स्थान समाज और राष्ट्र की प्रगति में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना किसी अन्य वर्ग का।

कांशीराम के विचारों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल वर्तमान की समस्याओं तक सीमित नहीं थे। वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी रास्ता दिखाना चाहते थे। उन्होंने यह समझा कि सामाजिक बदलाव केवल तत्कालिक नीतियों से नहीं आता, बल्कि यह तब संभव है जब समाज के हर सदस्य अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो और समानता, न्याय तथा सम्मान के मूल्यों को आत्मसात करे। उनकी यह सोच आज भी हमारे सामने मार्गदर्शक है, क्योंकि समाज में असमानता और अन्याय के खिलाफ संघर्ष कभी खत्म नहीं होता।

आज जब हम उनकी जयंती मना रहे हैं, तो हमें केवल उनके व्यक्तित्व को याद नहीं करना चाहिए। हमें उनके विचारों, उनकी सामाजिक सोच और उनके संघर्ष को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए। कांशीराम ने यह दिखाया कि समाज में सच्चे बदलाव के लिए राजनीतिक सत्ता का होना जरूरी नहीं बल्कि संगठन, जागरूकता और शिक्षा का होना आवश्यक है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि समाज के कमजोर वर्गों को संगठित करके ही असमानता और अन्याय के खिलाफ प्रभावी ढंग से लड़ाई लड़ी जा सकती है।

उनका संघर्ष केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा; उनकी विरासत आज भी बहुजन समाज को दिशा देती है। उनके आदर्श यह सिखाते हैं कि संगठन, शिक्षा और जागरूकता का संयोजन ही सामाजिक न्याय की सबसे बड़ी ताकत है। 15 मार्च के दिन उनकी जयंती इस प्रेरणा का प्रतीक है कि हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए और समाज के हर वर्ग को अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना चाहिए।

कांशीराम की सोच और उनके सामाजिक कार्य आज भी हमें याद दिलाते हैं कि परिवर्तन किसी व्यक्तिगत संघर्ष से नहीं आता, बल्कि संगठित और सतत प्रयास से आता है। उनका जीवन यह बताता है कि बहुजन समाज की चेतना ही समाज को सशक्त और न्यायपूर्ण बनाने की कुंजी है। उनकी जयंती हमें यह संदेश देती है कि समानता और सामाजिक न्याय के लिए लड़ाई जारी रहनी चाहिए और हर व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग रहना चाहिए।

कांशीराम की जयंती केवल स्मृति का दिन नहीं है, बल्कि बहुजन चेतना और सामाजिक न्याय की मशाल जलाने का दिन है

# तेल-गैस संकट के बीच सेंसेक्स का गिरना: क्या अर्थतंत्र में महासंकट के संकेत?

सौरभ वार्ष्णेय

वैश्विक अर्थव्यवस्था में जब भी ऊर्जा संकट गहराता है, उसका सीधा असर वित्तीय बाजारों और आम लोगों की जेब पर दिखाई देता है। हाल के दिनों में कच्चे तेल और गैस की कीमतों में बढ़ोतरी तथा आपूर्ति को लेकर बढ़ती अनिश्चितता के बीच भारतीय शेयर बाजार का प्रमुख सूचकांक गिरावट की ओर गया है। यह गिरावट केवल बाजार की सामान्य हलचल नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के सामने खड़े संभावित बड़े संकट का संकेत भी हो सकती है। वहीं जब मैं इस लेख को लिख रहा हूं तो सेंसेक्स और निफ्टी काफी हद तक गिर चुका है। ऐसे में सरकार के कहने के बावजूद जनमानस इस युद्ध के बीच ऊर्जा का भंडार भरकर रखना चाहता है. यह युद्ध क्या पटकथा लिखेगा, कोई नहीं जानता क्योंकि रुस-युक्रेन युद्ध भी अभी तक समाप्त नहीं हुआ।

भारत जैसे देश की ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयातित तेल और गैस पर निर्भर है। जब वैश्विक स्तर पर तेल-गैस की कीमतें बढ़ती हैं या आपूर्ति बाधित होती है, तो उसका असर सीधे महंगाई, उत्पादन लागत और व्यापार संतुलन पर पड़ता है। उद्योगों की लागत बढ़ती है, परिवहन महंगा होता है और अंततः इसका बोझ आम उपभोक्ता तक पहुंचता है। निवेशकों को भी यह संकेत मिलता है कि आने वाले समय में कंपनियों के मुनाफे पर दबाव बढ़ सकता है।

शेयर बाजार का गिरना इसी चिंता का प्रतिबिंब है। निवेशक भविष्य की आशंकाओं को देखते हुए बाजार से पैसा निकालने लगते हैं। विदेशी निवेशक भी जोखिम से बचने के लिए उभरते बाजारों से पूंजी निकालते हैं जिससे बाजार में गिरावट और तेज हो जाती है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो इसका असर निवेश, रोजगार और आर्थिक विकास की गति पर पड़ सकता है।

ऊर्जा संकट का दूसरा पहलू राजकोषीय दबाव भी है। सरकार को महंगाई नियंत्रित करने के लिए करों में कटौती, सब्सिडी या अन्य राहत उपाय देने पड़ सकते हैं। इससे सरकारी खजाने पर अतिरिक्त बोझ बढ़ता है। साथ ही यदि आयात बिल बढ़ता है तो चालू खाते का घाटा भी बढ़ सकता है जो आर्थिक स्थिरता के लिए चुनौती बन जाता है हालांकि यह भी सच है कि शेयर बाजार हमेशा दीर्घकालिक आर्थिक स्थिति का सटीक दर्पण नहीं होता। कई बार वैश्विक परिस्थितियों, भू-राजनीतिक तनाव या निवेशकों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया से भी बाजार अचानक गिर सकता है। इसलिए सेंसेक्स की गिरावट को तुरंत ₹महा संकट₹ मान लेना भी उचित नहीं होगा लेकिन इसे एक चेतावनी संकेत जरूर माना जाना चाहिए।

ऐसे समय में सरकार और नीति-निर्माताओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने की है। देश को तेल-गैस के आयात पर निर्भरता कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और रणनीतिक भंडार बढ़ाने जैसी नीतियों पर तेजी से काम करना होगा। साथ ही आर्थिक सुधारों और निवेश को बढ़ावा देकर बाजार का भरोसा बनाए रखना भी जरूरी है।

अंततः कहा जा सकता है कि तेल-गैस संकट के बीच सेंसेक्स की गिरावट केवल बाजार की घटना नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के सामने खड़ी चुनौतियों की याद दिलाती है। यदि समय रहते ठोस कदम उठाए जाएं तो यह संकट अवसर में भी बदल सकता है, लेकिन अगर इसे नजरअंदाज किया गया तो इसके गंभीर आर्थिक परिणाम सामने आ सकते हैं।

**निवेशक दोहरी दुविधा में**

वैश्विक और घरेलू आर्थिक परिस्थितियों के बीच आज निवेशक एक कठिन दौर से गुजर रहा है। बाजार में अनिश्चितता, अंतरराष्ट्रीय तनाव और महंगाई के दबाव ने निवेशकों को दोहरी दुविधा में डाल दिया है। एक ओर शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव है, वहीं दूसरी ओर सुरक्षित निवेश विकल्प भी अपेक्षित रिटर्न नहीं दे पा रहे हैं। ऐसे माहौल में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि निवेशक अपने धन को कहाँ और कैसे सुरक्षित रखें।

हाल के समय में वैश्विक स्तर पर कई घटनाएँ आर्थिक बाजारों को प्रभावित कर रही हैं। तेल-गैस

की कीमतों में अस्थिरता, अंतरराष्ट्रीय संघर्ष और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की नीतियों में बदलाव का असर भारत सहित दुनिया के शेयर बाजारों पर दिखाई दे रहा है। जब भी वैश्विक स्तर पर संकट गहराता है, निवेशक जोखिम से बचने के लिए सुरक्षित विकल्पों की ओर रुख करते हैं लेकिन वर्तमान स्थिति में सुरक्षित निवेश भी बहुत आकर्षक नहीं दिख रहा।

दूसरी ओर घरेलू स्तर पर भी निवेशकों के सामने कई सवाल खड़े हैं। महंगाई की दर में उतार-चढ़ाव, ब्याज दरों की अनिश्चितता और कंपनियों के भविष्य को लेकर आशंकाएँ निवेशकों को निर्णय लेने में कठिनाई पैदा कर रही हैं। शेयर बाजार में निवेश करने पर जोखिम अधिक है, जबकि बैंक जमा या अन्य सुरक्षित विकल्पों में रिटर्न सीमित है। यही कारण है कि निवेशक समझ नहीं पा रहे कि जोखिम उठाकर बाजार में बने रहें या सुरक्षित विकल्पों में पैसा लगाएँ।

निवेशकों की यह दुविधा केवल आर्थिक नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक भी है। बाजार की अस्थिरता के कारण कई छोटे निवेशक घबराकर अपने निवेश को निकाल लेते हैं, जिससे बाजार में और अधिक गिरावट देखने को मिलती है। वहीं कुछ अनुभवी निवेशक इसे अवसर के रूप में देखते हैं और गिरते बाजार में निवेश बढ़ाते हैं।

ऐसी स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण है संतुलित और दीर्घकालिक दृष्टिकोण। विशेषज्ञों का मानना है कि निवेशकों को घबराहट में निर्णय लेने के बजाय अपने निवेश को विविध क्षेत्रों में बांटना चाहिए और लंबी अवधि की रणनीति अपनानी चाहिए। इससे जोखिम कम किया जा सकता है और बाजार की अस्थिरता का प्रभाव भी सीमित किया जा सकता है।

सरकार और नियामक संस्थाओं की भी जिम्मेदारी है कि वे आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ। पारदर्शी नीतियाँ, निवेश के अनुकूल वातावरण और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देकर निवेशकों का भरोसा मजबूत किया जा सकता है।

यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय निवेशकों के लिए परीक्षा का दौर है। दोहरी दुविधा के बीच सही निर्णय वही होगा जो धैर्य, समझ और दीर्घकालिक सोच पर आधारित हो। अगर निवेशक संतुलित रणनीति अपनाते हैं, तो अस्थिर बाजार भी भविष्य के अवसरों में बदल सकता है।

**तेल-गैस संकट से कैसे मिले निजात ?**

विश्व राजनीति और ऊर्जा बाज़ार में बढ़ती अनिश्चितता ने एक बार फिर तेल-गैस संकट की आशंका को गहरा कर दिया है। मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव, आपूर्ति में रुकावट और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कीमतों के उतार-चढ़ाव का सीधा असर भारत जैसे आयात-निर्भर देश पर पड़ता है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए जब भी वैश्विक स्तर पर संकट पैदा होता है, उसका दबाव देश की अर्थव्यवस्था, उद्योग और आम उपभोक्ता पर साफ दिखाई देता है।तेल और गैस केवल ईंधन नहीं, बल्कि आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। परिवहन, बिजली उत्पादन, उद्योग और घरेलू उपयोग—हर क्षेत्र इन पर निर्भर है। जब इनकी कीमतें बढ़ती हैं या आपूर्ति कम होती है, तो महंगाई बढ़ती है, उत्पादन लागत बढ़ती है और आर्थिक विकास की गति भी प्रभावित होती है। इसलिए यह केवल ऊर्जा संकट नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक चुनौती भी बन जाता है।

इस संकट से निपटने के लिए सरकार को बहुस्तरीय रणनीति अपनानी होगी। सबसे पहले, ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण जरूरी है। भारत को केवल कुछ सीमित देशों पर निर्भर रहने के बजाय अलग-अलग क्षेत्रों से तेल और गैस की आपूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए। दीर्घकालिक समझौते और रणनीतिक भंडारण भी आपूर्ति सुरक्षा को मजबूत कर सकते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कदम वैकल्पिक और नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन जैसे स्रोत भविष्य में तेल-गैस पर निर्भरता कम कर सकते हैं। भारत ने इस दिशा में कुछ कदम उठाए हैं लेकिन इसे और तेज़ी से बढ़ाने की आवश्यकता है। तीसरा, ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना भी जरूरी है। उद्योगों, वाहनों और घरेलू उपयोग में ऊर्जा की बचत से खपत कम की जा सकती है। इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन और सार्वजनिक परिवहन का विस्तार भी तेल की मांग घटाने में मदद कर सकता है। तेल-गैस संकट हमें यह याद दिलाता है कि ऊर्जा सुरक्षा केवल आयात से नहीं बल्कि दीर्घकालिक नीति, तकनीकी नवाचार और आत्मनिर्भरता से ही सुनिश्चित हो सकती है। यदि भारत समय रहते सही कदम उठाता है, तो वह न केवल इस संकट से उबर सकता है बल्कि भविष्य की ऊर्जा चुनौतियों का भी मजबूती से सामना कर सकता है।

# सोफिया को कॉमन कैंडिडेट पसंद नहीं, इंडिपेंडेंट कैंडिडेट होने से इज्जत रह जाती

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा



**भूबनेश्वर :** कांग्रेस MLA सोफिया फिरदौस ने राज्य कांग्रेस की टॉप लीडरशिप और पार्टी के काम करने के तरीके से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की है। सोफिया ने कहा कि पार्टी लीडरशिप ने राज्यसभा कैंडिडेट के सिलेक्शन पर उनसे या किसी दूसरे MLA से कोई बातचीत नहीं की। सोफिया ने यह भी कहा कि राज्यसभा चुनाव में हॉर्स ट्रेडिंग रोकने के लिए बेंगलुरु में हुई मीटिंग के बारे में उन्हें कांग्रेस MLAs ने न तो बताया और न ही बुलाया। इसलिए, सोफिया ने कहा कि उनके बेंगलुरु जाने की कोई वजह नहीं है। सोफिया ने बताया कि भले ही कांग्रेस ने BJD कैंडिडेट को सपोर्ट किया था, लेकिन उनसे कोई बातचीत नहीं हुई। सोफिया फिरदौस ने यह भी कहा कि कांग्रेस का BJD कैंडिडेट को सपोर्ट करना सही नहीं था। कटक-बारबाटी MLA सोफिया फिरदौस BJD-कांग्रेस कॉमन कैंडिडेट को लेकर कांग्रेस में शामिल हो गई हैं।
सोफिया ने आज एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में सफाई दी। कैंडिडेट के सिलेक्शन पर कोई बातचीत नहीं हुई है। सोफिया फिरदौस ने शुरू में इनडायरेक्टली कहा कि उन्हें पार्टी में लाया जा रहा है। उन्हें पिछले एक साल से दूर रखा गया है। राज्यसभा चुनाव के लिए उनसे कोई चर्चा नहीं हुई है। इसी तरह, उन्हें नुआपाड़ा उपचुनाव में भी शामिल नहीं किया गया है।
यह भी पता नहीं है कि कटक में कांग्रेस में कौन शामिल हो रहा है। सोफिया ने राज्यसभा चुनाव के लिए कांग्रेस-BJD गठबंधन को प्राथमिकता नहीं दी है। उम्मीदवारों के चयन पर कोई चर्चा नहीं हुई। बेहतर होता कि वे सभी MLA से इस बारे में चर्चा करते, क्योंकि वे वोट कर रहे हैं।
इस बीच, सोफिया ने कांग्रेस उम्मीदवारों को वोट देने के बारे में कुछ भी साफ नहीं किया है, जबकि कहा है कि वह चुनाव में जरूर वोट करेंगी। जब रिपोर्टरों ने उनसे पूछा कि क्या वह कांग्रेस उम्मीदवारों को वोट देंगी, तो सोफिया ने कोई साफ जवाब नहीं दिया।

# फायर सेफ्टी नियमों की अनदेखी पर कार्रवाई की मांग, पीएम को भेजी शिकायत


Name Of Complainant
RAJKUMAR YADAV
Date of Receipt
12/03/2026
Received By Ministry/Department
Prime Minister's Office
Grievance Description
सेवा में
माननीय प्रधानमंत्री महोदय भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय - नई दिल्ली
विषय: ओडिशा के सुंदरगढ़ सहित झारसुगुड़ा, संबलपुर, बरगढ़, क्योंझर एवं अनुगुल जिलों में अग्निशमन सुरक्षा नियमों की घोर अनदेखी पर कड़ी कार्रवाई हेतु निवेदन।
माननीय महोदय,
सविनय निवेदन है कि ओडिशा राज्य के सुंदरगढ़ जिले सहित झारसुगुड़ा, संबलपुर, बरगढ़, क्योंझर तथा अनुगुल क्षेत्रों में अग्निशमन सुरक्षा मानकों की निरंतर अनदेखी की जा रही है, जिससे आम नागरिकों के प्राणों पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है।


1. सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, बार-रेस्टोरेंट, क्लब, मॉल, सिनेमा हॉल एवं बहुमंजिला इमारतों के लिए वैध फायर लाइसेंस अनिवार्य किया जाए।
2. फायर लाइसेंस के साथ अग्नि बीमा पॉलिसी को भी अनिवार्य किया जाए।
3. सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करने वाले प्रतिष्ठानों को तत्काल सील करने का प्रावधान हो।
4. मेला, प्रदर्शनी एवं सार्वजनिक आयोजनों के लिए अस्थायी अग्निशमन अनुमति को सख्ती से लागू किया जाए।
5. लापरवाही बरतने वाले अग्निशमन विभाग एवं संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों पर कड़ी विभागीय एवं दंडात्मक कार्रवाई की जाए।
6. नियमित निरीक्षण हेतु विशेष संयुक्त उड़नदस्ता टीमों का गठन किया जाए।
महोदय, समय रहते कठोर कदम उठाना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा भविष्य में किसी बड़ी दुर्घटना की स्थिति में भारी जन-धन हानि से इंकार नहीं किया जा सकता। जनसुरक्षा सर्वोपरि है और इस दिशा में त्वरित एवं कठोर प्रशासनिक हस्तक्षेप अत्यंत अपेक्षित है।
आपसे निवेदन है कि इस गंभीर जनसुरक्षा विषय पर तत्काल संज्ञान लेकर आवश्यक कार्रवाई करने की कृपा करें।
सधन्यवाद।
भवदीय
राजकुमार यादव
9437040250



9437040250
Drraajky@gmail.com
Current Status
Under process
Date of Action
13/03/2026
Officer Concerns To
Officer Name
Secretary (Secretary)
Organisation name
Home
Contact Address
Odisha Secretariat
Email Address
Contact Number



परिवहन विशेष न्यूज

ओडिशा के सुंदरगढ़ सहित कई जिलों में अग्निशमन सुरक्षा नियमों की अनदेखी को लेकर आरटीआई एक्टिविस्ट व सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. राजकुमार यादव ने प्रधानमंत्री को शिकायत भेजकर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर सुंदरगढ़, झारसुगुड़ा, संबलपुर, बरगढ़, क्योंझर और अनुगुल जिलों में फायर सेफ्टी नियमों का व्यापक उल्लंघन होने का आरोप लगाया है।

डॉ. यादव ने अपने पत्र में कहा है कि इन क्षेत्रों में अनेक व्यवसायिक प्रतिष्ठान, बार-रेस्टोरेंट, क्लब, बहुमंजिला व्यावसायिक भवन तथा मेला और प्रदर्शनी आयोजक अग्निशमन विभाग के नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। कई स्थानों पर बिना वैध फायर लाइसेंस के ही व्यवसाय संचालित किए जा रहे हैं। वहीं जिन प्रतिष्ठानों के पास लाइसेंस हैं, वे भी आवश्यक अग्निशमन उपकरण, आपातकालीन निकास व्यवस्था और सुरक्षा मानकों का पालन नहीं कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में किसी भी समय आग लगने जैसी दुर्घटना होने पर बड़ी जनहानि की आशंका बनी रहती है। इसके साथ ही फायर लाइसेंस के साथ अग्नि बीमा अनिवार्य नहीं होने के कारण दुर्घटना की स्थिति में पीड़ितों को समुचित मुआवजा भी नहीं मिल पाता।

डॉ. यादव ने आरोप लगाया कि संबंधित विभागों के कुछ अधिकारी और कर्मचारी निरीक्षण में लापरवाही बरत रहे हैं और कई मामलों में अनियमितताओं को नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने इसे आम जनता की सुरक्षा के साथ गंभीर खिलवाड़ बताया।

प्रधानमंत्री को भेजे गए पत्र में उन्होंने जनहित में कई अहम मांगें भी उठाई हैं। इनमें सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, मॉल, क्लब, सिनेमा हॉल और बहुमंजिला इमारतों के लिए वैध फायर लाइसेंस अनिवार्य करने, फायर लाइसेंस के साथ अग्नि बीमा पॉलिसी को भी जरूरी बनाने, सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करने वाले प्रतिष्ठानों को सील करने और मेला, प्रदर्शनी व सार्वजनिक आयोजनों के लिए अस्थायी अग्निशमन अनुमति को सख्ती से लागू करने की मांग शामिल है।

इसके अलावा उन्होंने अग्निशमन विभाग और प्रशासनिक अधिकारियों की लापरवाही पर कड़ी विभागीय और दंडात्मक कार्रवाई करने तथा नियमित निरीक्षण के लिए विशेष संयुक्त उड़नदस्ता टीमों के गठन की भी मांग की है।

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा कि यदि समय रहते सख्त कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में किसी बड़ी दुर्घटना से भारी जन-धन हानि हो सकती है। उन्होंने प्रधानमंत्री से इस गंभीर जनसुरक्षा मुद्दे पर तत्काल संज्ञान लेकर आवश्यक कार्रवाई करने की अपील की है।



# सरहदों के बीच (कहानी)

चारों ओर मिसाइलों की गूँज थी। बारूद की तीखी गंध से हवा भारी हो चुकी थी। कहीं से चीखें सुनाई दे रही थीं, तो कहीं मशीनगनों की दनदनाहट। आलीशान इमारतें ताश के पत्तों की तरह ढह रही थीं। मार्च 2026 की वह सुबह किसी डरावने सपने जैसी थी, जिसने पूरी दुनिया को सहमा दिया था। कहते हैं, युद्ध केवल तब नहीं होता जब गोलियाँ चलती हैं। उसका असर पहले भी महसूस होता है और बाद में भी। युद्ध में सिर्फ सैनिक ही नहीं मरते, बल्कि वे भी हार जाते हैं जिन्हें अंत तक समझ ही नहीं आता कि यह सब क्यों हो रहा है। सच तो यह है कि युद्ध अपने पीछे केवल दर्द, डर और टूटे हुए सपने छोड़ जाता है।

टीवी चैनलों पर एक ही खबर बार-बार दोहराई जा रही थी-अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच लंबे समय से चला आ रहा तनाव अब भयानक युद्ध का रूप ले चुका है। खाड़ी क्षेत्र के शांत माने जाने वाले देशों में भी अचानक डर और अनिश्चितता का माहौल बन गया था। कुवैत, दुबई, बहरीन और मस्कट जैसे देशों में रोज़ी-रोटी की तलाश में आए लाखों भारतीयों की तरह हजारों राजस्थानी परिवार भी चिंता में डूब गए थे। राजस्थान के नागौर जिले के एक छोटे से गाँव में रहने वाला 21 वर्षीय आरिश भी इसी डर के बीच घिरा हुआ था।

आरिश, ओमान की राजधानी मस्कट के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष का छात्र था। वह सिर्फ एक छात्र नहीं था, बल्कि अपने परिवार की उम्मीदों का सहारा भी था। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, इसलिए पढ़ाई के साथ-साथ वह शाम को एक छोटे से कैफे में वेटर और क्लीनर का काम भी करता था। उसके पिता यूसुफ खान दुबई की तपती धूप में एक कंस्ट्रक्शन कंपनी में मजदूरी करते थे। उनका सपना था कि उनका बेटा पढ़-लिखकर इंजीनियर बने, ताकि उसे मजदूरी न करनी पड़े। गाँव में माँ सायरा बेगम और छोटी बहन आलिया हर दिन उसी उम्मीद में जीती थीं कि एक दिन आरिश पढ़ाई पूरी कर घर लौटेगा और उनका कच्चा घर पक्का बनवाएगा। लेकिन मार्च की उस मनहूस सुबह ने सब कुछ बदल दिया।

कैफे के काउंटर पर लगे टीवी पर जब आरिश ने आसमान से बरसते आग के गोले देखे, तो उसके हाथ से चाय का कप छूटकर जमीन पर गिर गया। कांच के टुकड़े बिखर गए। उसे लगा जैसे उसके सपने भी उन्हीं टुकड़ों की तरह टूट गए हों। सोशल मीडिया पर तरह-तरह की खबरें फैल रही थीं। कोई कह रहा था कि एयरपोर्ट के पास एक मिसाइल गिरी है। कहीं यह चर्चा थी कि समुद्री रास्ते बंद कर दिए गए हैं। मस्कट में बैठे आरिश के लिए ये खबरें केवल समाचार नहीं थीं, बल्कि उसके भविष्य पर मंडराता हुआ डर थीं। उसने घबराते हुए अपने पिता को दुबई फोन लगाया। कई बार नेटवर्क बिजी आया। आखिरकार कॉल लग गई। 'अब्बू वहाँ सब ठीक है ना? लोग कह रहे हैं कि दुबई पर भी खतरा है।' आरिश की आवाज काँप रही थी।

फोन के उस पार कुछ पल खामोशी रही। फिर यूसुफ खान की थकी हुई आवाज आई- 'बेटा, यहाँ बहुत अफरा-तफरी है। कंपनी ने काम बंद कर दिया है और हमें कैंप में रहने को कहा है। तुम बस अपनी हिफाजत करना।'

उधर नागौर के उस छोटे से घर में भी बेचैनी छाई हुई थी। सायरा बेगम सुबह उठते ही मोबाइल पर खबरें देखने लगी थीं। नमाज के बाद वह घंटों दुआ करतीं कि उनके बेटे और पति सुरक्षित रहें। एक दिन उन्होंने मोबाइल में रेडियो चलाया। खबर आ रही थी- 'खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव के कारण युद्ध जैसे हालात बन गए हैं। आसमान में मंडराते खतरे और सायरनों की आवाजों के बीच आम लोग डर और अनिश्चितता में जी रहे हैं। हजारों प्रवासी अपने घर लौटने की उम्मीद लगाए बैठे हैं।' यह सुनकर सायरा बेगम की आँखें भर आईं। उस शाम गाँव के चबूतरे पर बैठी वह अपनी पड़ोसन से बोलीं- 'एक बेटा मस्कट में फंसा है और उसके अब्बू दुबई में। अल्लाह जाने कैसी जंग है यह, जो सरहदों पर होकर भी हमारे घरों के चूल्हे बुझा रही है।' पास ही खड़ी छोटी आलिया अपनी माँ का दुपट्टा पकड़कर मासूमियत से पूछने लगी- 'अम्मी, ये जंग क्या होती है अम्मीजान? जंग बुरी होती है क्या? लोग आपस में लड़ते क्यों हैं? क्या भाईजान अब खिलौने लेकर नहीं आएंगे? क्या वो जंग में खो जाएंगे?' आलिया ने प्रश्नों की जैसे झड़ी लगा दी थी। सायरा बेगम के पास आलिया के मासूम प्रश्नों का कोई जवाब नहीं था। उन्होंने बस उसे सीने से लगा लिया।

उधर मस्कट के कॉलेज हॉस्टल का माहौल भी बदल चुका था। जो गलियारे कभी हँसी-मजाक से भरे रहते थे, वहाँ अब जल्द-से-जल्द घर लौटने की बेचैनी थी। आरिश ने देखा कि अमीर देशों के छात्र चार्टर्ड विमानों से वापस बुलाए जा रहे थे। लेकिन उसके जैसे कई छात्र पैसे और साधनों की कमी के कारण वहीं फंसे हुए थे। तभी उसका दोस्त समीर घबराकर कमरे में आया। 'आरिश, एयरपोर्ट पर हजारों लोगों की भीड़ है। अगर अभी नहीं निकले, तो शायद बाद में मौका ही न मिले।' आरिश खिड़की से बाहर समुद्र की ओर देखने लगा। कुछ देर बाद बोला- 'कैसे जाऊँ समीर? इस सेमेस्टर की फीस भर दी है। जेब में टिकट तक के पैसे भी नहीं हैं। और अब्बू दुबई में अकेले हैं मैं यहाँ से चला गया तो उन्हें और चिंता होगी।' कुछ पलों के लिए दोनों के बीच एक भारी सन्नाटा छा गया।

उस रात बिजली चली गई। अँधेरे में आरिश ने अपने पिता को वीडियो कॉल किया। स्क्रीन पर उनका चेहरा साफ नहीं दिख रहा था, लेकिन आँखों की चिंता साफ झलक रही थी। यूसुफ खान बोले- 'बेटा, यहाँ कैंप के पास कल धमाका हुआ था। मुझे डर लगता है पता नहीं हम फिर मिल पाएँगे या नहीं। तुम पढ़ाई की चिंता छोड़ो और किसी तरह घर पहुँच जाओ।' आरिश ने खुद को संभालते हुए कहा-'अब्बू, हिम्मत रखिए। अल्लाह की दुआओं से सब ठीक होगा।' लेकिन वह भी जानता था कि यह दिलासा ही था, हकीकत नहीं।

उस रात वह हॉस्टल की छत पर जाकर खड़ा हो गया। दूर आसमान में तारे चमक रहे थे। उसे अचानक अपने गाँव की याद आने लगी-मिट्टी की खुशबू, माँ के हाथ की रोटियाँ और बहन की चुलबुली-सी हँसी। तभी उसे एहसास हुआ कि युद्ध की सबसे बड़ी त्रासदी मौत नहीं होती, बल्कि अपनों से दूर होने का वह दर्द होता है जो इंसान को भीतर से तोड़ देता है। उस दिन उसने अपनी डायरी में लिखा-'युद्ध नक्शों पर सरहदें बदल देता है, लेकिन इंसानों के दिलों पर गहरे घाव छोड़ जाता है।'

इस कहानी का अंत किसी जीत या हार से नहीं हुआ। आरिश आज भी मस्कट की उस छत पर खड़ा आसमान देखता है। दुबई के एक कैंप में यूसुफ खान भी उसी चाँद को देखते होंगे। और शायद नागौर के उस छोटे से घर में सायरा बेगम भी उसी चाँद को देखकर अपने बेटे और पति की सलामती की दुआ कर रही होंगी। यह केवल एक परिवार की कहानी नहीं है। यह उन लाखों लोगों की कहानी है जिनकी जिंदगी के फैसले कहीं दूर सत्ता के गलियारों में लिए जाते हैं। युद्ध चाहे जहाँ भी हो, उसकी पीड़ा आखिरकार उन घरों तक पहुँच ही जाती है, जहाँ लोग रात भर चिराग जलाकर अपने प्रियजनों की सलामती की दुआ करते रहते हैं।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड**

# राष्ट्रपति का बार-बार अपमान क्यों

राजेश कुमार पासी

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद राजनीति से ऊपर होता है। राष्ट्रपति के चुनाव में राजनीति होती है लेकिन जब राष्ट्रपति का चुनाव हो जाता है तो वो पूरे देश का राष्ट्रपति होता है। राजनीतिक दल भी उसे किसी दल विशेष से नहीं जोड़ते हैं। हमारे देश के संविधान ने राष्ट्रपति को सबसे ऊपर रखा है और वो एक तरह से राष्ट्र प्रमुख माना जाता है। देश का पूरा प्रशासन उनके ही नाम पर चलाया जाता है जबकि उनका प्रशासन में कोई दखल नहीं होता। संविधान में वर्णित राष्ट्रपति की शक्तियां, वास्तव में प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमंडल की होती हैं। इसके बावजूद राष्ट्रपति के पास कई अधिकार हैं जहां वो अपने विवेक का इस्तेमाल कर सकते हैं। वो संसद द्वारा पास किये गए विधेयक को दोबारा विचारार्थ हेतु वापस भेज सकते हैं। इसके अलावा जब संसद में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलता है तो राष्ट्रपति की शक्तियां बढ़ जाती हैं। वैसे देखा जाए तो ज्यादातर मामलों में राष्ट्रपति कैबिनेट की रबर स्टैंप के रूप में ही काम करते हैं।

दूसरी तरफ सच है कि राष्ट्रपति को देश का प्रथम नागरिक माना जाता है। प्रोटोकॉल के अनुसार राष्ट्रपति ही देश का शासक होता है. इसी आधार पर राष्ट्रपति को सम्मान दिया जाता है। जब राष्ट्रपति का प्रशासन में सीधा दखल नहीं है तो उन्हें राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए। जब से द्रोपदी मुर्मू राष्ट्रपति बनी हैं, उनका कई बार अपमान किया जा चुका है। कई बार ऐसा महसूस होता है कि उनका इस पद पर आना कुछ लोगों को हजम नहीं हो रहा है। आदिवासी समाज से आने वाली द्रोपदी मुर्मू देश की पहली राष्ट्रपति हैं। देखा जाए तो मोदी सरकार ने उन्हें राष्ट्रपति बनाकर देश के आदिवासी समाज को सम्मानित करने का काम किया है। देश का आदिवासी समाज इस बात पर गर्व करता है कि उनके समुदाय की एक महिला इस समय देश के सर्वोच्च पद पर आसीन है। एक तरह से ये भी आदिवासियों के सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

राष्ट्रपति पर राजनीति नहीं की जानी चाहिए लेकिन पिछले कुछ समय से उन पर भी राजनीति की जा रही है। अभी तक केवल उनका मजाक बनाया गया है, लेकिन ममता बनर्जी ने तो उनका और उनके पद का जबरदस्त अपमान किया है। जब राष्ट्रपति एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने बंगाल गयी थीं तो ममता बनर्जी एसआईआर के खिलाफ धरना दे रही थी। वो राष्ट्रपति के साथ कार्यक्रम में शामिल नहीं हुई और न ही उनकी अगवानी की। इसके अलावा उन्होंने अपने किसी मंत्री को भी उनकी अगवानी करने के लिए भेजा। देखा जाए तो ये राष्ट्रपति के आगमन पर किये जाने वाले प्रोटोकॉल का बड़ा उल्लंघन है।

ममता बनर्जी अपने अक्खड़पन और जिद्दी स्वभाव के लिए जानी जाती हैं, लेकिन राष्ट्रपति के साथ उनका व्यवहार समझ से परे है। ऐसा लगता है कि एसआईआर का विरोध करते-करते वो इतना बौखला गईं हैं कि उन्हें सही और गलत का पता ही नहीं चल रहा है। उनकी बौखलाहट की वजह यह है कि एसआईआर की प्रक्रिया को रोकने की उनकी सारी कोशिशें बेकार हो गयी हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर कलकत्ता हाईकोर्ट न्यायिक अधिकारियों के जरिये इस प्रक्रिया को पूरा करने में लगा हुआ है। ममता बनर्जी अपने आपको असहाय महसूस कर रही हैं, इसलिए धरना देने बैठी और फिर खुद ही उठ गईं। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू अंतरराष्ट्रीय संथाल कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने बंगाल के दार्जीलिंग में गयी थी, इसके बाद वो विद्यानगर गईं और उन्होंने वहां सार्वजनिक रूप से ममता बनर्जी के प्रति अपनी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी को इस कार्यक्रम में मेरे साथ होना चाहिए था। उन्होंने कहा, "मैं बंगाल की बेटी हूँ, फिर भी मुझे यहां आने की अनुमति नहीं है। ममता मेरी बहन जैसी हैं, पता नहीं, शायद वो मुझसे नाराज हैं। शायद इसलिए मुझे वहां जाना पड़ा। कोई बात नहीं, मुझे इस बात का कोई गुस्सा या नाराजगी नहीं है।" महामहिम राष्ट्रपति इस तरह से अपनी नाराजगी जाहिर नहीं करती हैं. वो बेहद शांत स्वभाव की हैं। अगर उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी नाराजगी जाहिर की है तो इसका मतलब है कि उन्होंने खुद को अपमानित महसूस किया है। उन्होंने अपना कार्यक्रम स्थल बदले जाने पर मूल स्थान का दौरा किया था, इसके बाद उन्होंने अपनी नाराजगी जाहिर की। कार्यक्रम का आयोजन विद्यानगर में किया जाना था लेकिन उसका स्थान बदलकर बागडोगरा के गुसाईपुर में कर दिया गया। अजीब बात यह है कि राष्ट्रपति के कार्यक्रम को पुलिस ने अनुमति नहीं दी थी जिसके कारण स्थान बदलना पड़ा। राष्ट्रपति को गुस्सा यह था कि आयोजन स्थल बहुत छोटा और दूर था जहां लोग पहुंच नहीं पाए। राष्ट्रपति के द्वारा नाराजगी जाहिर करने के बाद भाजपा ने टीएमसी पर हल्ला बोल दिया है। भाजपा ने इसे राष्ट्रपति का अपमान बताते हुए कहा है कि एक आदिवासी समाज से आने वाली राष्ट्रपति का अपमान किया जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी ट्वीट करके इस मुद्दे को उठाया है और टीएमसी को इस अपमान के लिए जिम्मेदार ठहराया है। इस मुद्दे ने भाजपा को बंगाल के हालात पर बोलने का मौका दे दिया है। भाजपा ममता बनर्जी की विरोधी पार्टी है, उसे हटा भी दिया जाए तो मुद्दा छोटा नहीं होता। ममता बनर्जी ने जिस तरह से महामहिम राष्ट्रपति को जवाब दिया है, उससे पता चलता है कि उनका अपमान अंजाने में नहीं हुआ है, बल्कि जानबूझकर किया गया है। उन्होंने एक फ़ोटो दिखाकर कहा है कि राष्ट्रपति को तब अपमान महसूस नहीं हुआ था। वास्तव में भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को 'भारत रत्न' पुरस्कार देने राष्ट्रपति महोदया उनके घर गईं थीं। जब उन्होंने खड़े होकर आडवाणी जी को पुरस्कार दिया तो वो बैठे हुए थे और वहां मोदी जी भी उनकी बगल में बैठे थे। इसके अलावा भी उस समय वहां कई नेता उपस्थित थे, जो वहां कुर्सियों पर बैठे हुए थे। ममता बनर्जी के कहने का मतलब यह था कि आप राष्ट्रपति होकर वहां खड़ी थी और वहां सब बैठे हुए थे लेकिन तब आपको अपमानित महसूस नहीं हुआ। वास्तव में ममता बनर्जी जानबूझकर अंजान बन रही हैं। भारत रत्न या अन्य पुरस्कार देते समय राष्ट्रपति खड़े रहते हैं और पुरस्कृत व्यक्ति भी खड़े होकर पुरस्कार ग्रहण करता है। उन दोनों के अलावा सब बैठे रहते हैं, ये भी एक प्रोटोकॉल है। जब पुरस्कृत व्यक्ति खड़े होने में असमर्थ होता है, तब भी राष्ट्रपति खड़े होकर उसे पुरस्कृत करते हैं। राष्ट्रपति भवन में भी कई बार देखा गया है, जब पुरस्कृत व्यक्ति चलकर उनके पास नहीं जा सकते तो राष्ट्रपति खुद चलकर उनकी कुर्सी पर ही पुरस्कार प्रदान करते हैं। ये फोटो दिखाकर ममता बनर्जी ने साबित कर दिया कि उन्होंने जानबूझकर उनका अपमान किया है। वो दिखाना चाहती हैं कि वो उनका सम्मान नहीं करती हैं। ममता बनर्जी ने कोलकाता में अपने धरना स्थल से बोलते हुए कहा, "मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि राष्ट्रपति को बीजेपी ने अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए भेजा है। राष्ट्रपति बीजेपी की राजनीति में फंस गई हैं।"

# भारत में बेहतर शासन प्रणाली के लिए चीनी मॉडल को अपनाइये

कमलेश पांडेय

भारत का पड़ोसी देश चीन, रणनीतिपूर्वक पश्चिमी देशों के लोकतांत्रिक षड्यंत्रों को मात देता आया है। इससे भी भारत बहुत कुछ सीख सकता है। कहा भी जाता है कि अमेरिका को वकील और चीन को इंजीनियर चलाते हैं। यह पश्चिमी लोकतंत्र पर बहुत बड़ा व्यंग्य भी समझा जाता है। चूंकि देर-सबेर भारत का मुकाबला चीन से ही होना है तो फिर क्यों नहीं भारत चीनी शासन प्रणाली को अपनाकर खुद को उस जैसा ही मजबूत बना ले।

ऐसा इसलिए कि अब्राहम परिवार का सूत्रधार अमेरिका, ईसाई-यहूदी-इस्लामिक मुल्कों में भारत को कभी आगे नहीं बढ़ने देगा। वह ब्रिटेन के ही तर्ज पर यहां जातीयता और धर्मनिरपेक्षता को हवा देगा। पक्ष-विपक्ष को शह देकर भटकाएगा। लोकतंत्र और भागीदारी की आड़ में एक दूसरे के विरुद्ध कुचक्र चलवायेगा। इसलिए भारत-चीन की दोस्ती उतनी क्षति नहीं पहुंचाएगी जितनी कि पश्चिमी देशों की दोगलागिरी पहुंचा चुकी है।

वहीं, पश्चिमी कुचक्रों यानी अमेरिकी-यूरोपीय षड्यंत्रों से एशिया को महफूज रखने के लिए, सावधान रहकर रूस-भारत-चीन को समझदारीपूर्वक आगे बढ़ना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की विफलता और अमेरिकी दादागिरी को यदि समय रहते काबू नहीं किया गया तो ईसाई, यहूदी व इस्लामिक देश आपस में ही लड़-कट मरेंगे या फिर भारत के अकूत प्राकृतिक संसाधनों पर हमलावर होंगे। इनका अतीत भी यही चुगली करता है।

अब समझिए, चीन जैसा प्रशासनिक मॉडल भारत में लाने के लिए सिर्फ़ "कदम" नहीं, पूरे संवैधानिक-राजनीतिक ढांचे की दिशा बदलनी पड़ेगी जिसका मतलब लोकतांत्रिक, बहुदलीय, संघीय और मौलिक अधिकार आधारित व्यवस्था को मूल रूप से बदलना है। इसे चरणबद्ध, यथार्थवादी (और जोखिम-सहित) रूप में नीचे दर्शा रहा हूँ। उससे पहले भारतीय लक्ष्य स्पष्ट करना होगा कि चीन से क्या कॉपी करना है और क्या नहीं! दरअसल, चीन की शासन प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

पहला, एकदलीय कम्युनिस्ट शासन, जहां वास्तविक सत्ता चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के हाथ में होती है जबकि "पीपुल्स कांग्रेस" प्रणाली, जहाँ नेशनल पीपुल्स कांग्रेस औपचारिक रूप से सर्वोच्च अंग है, के ऊपर व्यवहार में पार्टी सर्वोपरि रहती है। वहीं, सत्ता के अंगों में व्यावहारिक रूप से कोई सख़्त विभाजन नहीं बल्कि सब पर पार्टी का नेतृत्व मजबूत होता है। वहां बहुत सीमित राजनीतिक विपक्ष है. मीडिया-नागरिक समाज पर कड़ा नियंत्रण है, इसलिए ज्यादा सियासी उधेड़बुन में लोग नहीं फंसते हैं।

अब भारत की मौजूदा बुनियाद समझते हैं। यहां संसदीय लोकतंत्र है, बहुदलीय प्रतियोगिता दिखती है, संघीय ढांचा (केंद्र–राज्य) है, मौलिक अधिकार मिले हैं, न्यायपालिका की स्वतंत्रता है और न्यायिक समीक्षा को महत्व दिया गया है। यहां सत्ता का आंशिक विभाजन है और "चेक्स ऐंड बैलेंस" भी है लेकिन नेताओं का कलह, अधिकारियों की मनमर्जी और जनता के स्वार्थी सिरफुटौव्वल का ठोस विकल्प देश को चाहिए।

इसलिए कोई भी "चीन आधारित" मॉडल दो रास्तों में से होगा: पहला, "कठोर" रास्ता: चीन जैसा लगभग-एकदलीय, केंद्रीकृत, अधिकार-सीमित मॉडल, और दूसरा, "मृदु" रास्ता: चीन से प्रशासनिक-नीतिगत दक्षता के सबक लेकर लोकतंत्र को बरकरार रखना। इस हेतु संवैधानिक स्तर पर बड़े परिवर्तनों के कदम उठाने होंगे। यदि कोई चीन-नुमा राजनीतिक मॉडल चाहता है तो सैद्धांतिक कदम भी उठाने होंगे। संविधान की मूल संरचना बदलने की कोशिश करनी होगी। अनुच्छेद 14, 19, 21, 25 आदि मौलिक अधिकारों को सीमित/पुनर्परिभाषित करना करना होगा। अभिव्यक्ति, संगठन, धर्म-स्वतंत्रता पर व्यापक नियंत्रण संभव करने हेतु। वहीं, परोक्ष कारोबार बन चुकी न्यायिक समीक्षा और "बेसिक स्ट्रक्चर" सिद्धांत को कमज़ोर करने या हटाने के लिए व्यापक संशोधन करना होगा।

खासकर, बहुदलीय व्यवस्था से "प्रभुत्वशाली दल" या व्यवहारिक-एकदलीय ढांचा तैयार करना होगा ताकि एक मुख्य राष्ट्रीय पार्टी को संवैधानिक या कानूनी रूप से "राष्ट्र-निर्माण की धुरी" जैसा दर्जा मिले जबकि अन्य दलों को औपचारिक-सहयोगी पर गैर-प्रतिस्पर्धी बनाना होगा। चीन में भी 8 छोटे दल सीसीपी (CCP) के अधीन हैं। ऐसा होने से जातीय व धार्मिक पार्टी और पारिवारिक वंशवाद का सफाया होगा। वहीं, चुनावी क़ानूनों में बदलाव से पार्टी के विरुद्ध राजनीतिक प्रतिस्पर्धा कम होगी और "अनुमोदित विपक्ष" की दिशा तय होगी।

भारत में क्षेत्रवादी सियासत से जिस तरह से राष्ट्रीय हितों को क्षति पहुंचाई जा रही है, उससे बेहतर है कि केंद्र में सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण हो। इस हेतु भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में संशोधन कर ज़्यादातर महत्त्वपूर्ण विषय जैसे- शिक्षा, पुलिस, कृषि, भूमि, स्वास्थ्य को केंद्र सूची या संयुक्त सूची में लाना जरूरी है। वहीं राष्ट्रपति/केंद्र सरकार को राज्यों की नीतियों पर व्यापक वीटो देने होंगे और गवर्नर की भूमिका और मज़बूत करना होगा; साथ ही, आपातकालीन प्रावधानों का दायरा बढ़ाना होगा।

खासकर, संसद के ऊपर "पार्टी संरचना" की वास्तविक सर्वोच्चता लानी होगी। चीन की तरह पार्टी-संगठन (पॉलित ब्यूरो, स्टैंडिंग कमेटी टाइप) को वास्तविक नीति-निर्माता बनाना होगा और संसद को मुख्यतः अनुमोदन मंच में बदलना होगा। साथ ही सभी प्रमुख संवैधानिक संस्थाओं में पार्टी-सेल/कोर-कमेटी अनिवार्य करके निर्णयों को पार्टी लाइन से बाँधना होगा। क़ानूनी-राजनीतिक यथार्थ के दृष्टिगत यह सब भारत की "बेसिक स्ट्रक्चर" न्यायिक व्याख्या से टकराएगा; इसलिए व्यवहार में ऐसा मॉडल लागू करना प्रायः असंवैधानिक क्रांतिकारी बदलाव या बहुत दीर्घकालिक "क्रमिक परिवर्तन" के बिना संभव नहीं है।

जहां तक प्रशासनिक और नीतिगत स्तर के "चीनी सबक" की बात है तो अगर लक्ष्य यह है कि चीन की "गवर्नेंस दक्षता" ली जाए और लोकतंत्र भी बरक़रार रहे तो अपेक्षाकृत व्यावहारिक कदम उठाने होंगे। इस हेतु दीर्घकालिक राष्ट्रीय विकास योजनाएँ 20–30 वर्ष का औद्योगिक, तकनीकी और सैन्य-आर्थिक रोडमैप, जिसे दल बदलने पर भी मुख्यतः जारी रखा जाए। यही चीन की लांग-टर्म प्लानिंग की तरह होगा।

वहीं, कैडर-आधारित नौकरशाही प्रबंधन के तहत वरिष्ठ प्रशासनिक पदों पर पदोन्नति के लिए सख़्त प्रदर्शन-मानक बनाना होगा न कि केवल वरिष्ठता के आधार पर। वहीं स्थानीय स्तर पर "एकीकृत कमांड" मॉडल के तहत जिला/ज़िले से नीचे स्तर पर बहु-विभागीय टीम को एक नेता के तहत रखना होगा। साथ ही स्थानीय स्तर पर नियंत्रित-भागीदारी रखनी होगी। चीन की तरह गाँव-ज़िला स्तर पर परामर्शी निकाय, जन सुनवाई, डिजिटल फीडबैक; निर्णय अंततः मज़बूत कार्यपालिका के हाथ में, पर इनपुट व्यापक लेना होगा।

एक बात और, टेक्नोक्रेटिक शासन और डेटा-ड्रिवन नीतियाँ बनाने से नीति-निर्माण में टेक्नोक्रेट्स, विशेषज्ञ समितियों और डेटा एनालिटिक्स की गहरी भूमिका निर्धारित करनी होगी, जैसे चीन शहरी नियोजन, औद्योगिक नीति, एआई-सम्बंधित विनियमन में करता है। इस प्रकार इन महत्वपूर्ण कदमों से चीन जैसा "एकदलीय अधिकारवादी" नहीं, बल्कि अपेक्षाकृत अधिक अनुशासित और परिणाम-उन्मुख शासन मॉडल बन सकता है, जो भारतीय संविधान के भीतर भी संभव है, कतिपय सीमाओं के साथ)।

वहीं,. सुरक्षा, सूचना-नियंत्रण और समाज हेतु चीन के आधार पर कठोर नियंत्रण का एजेंडा हो तो संभावित कदम भी उठाए जा सकते हैं। सूचना और इंटरनेट नियंत्रण के तर्ज पर बड़े सोशल मीडिया और विदेशी प्लेटफॉर्म पर कठोर निगरानी, डेटा-लोकलाइजेशन, लाइसेंस आधारित डिजिटल प्रकाशन, "ग्रेट फ़ायरवॉल" जैसे फ़िल्टरिंग-मैकेनिज़्म की भारतीय रूप में स्थापना करनी होगी। वहीं सिविल सोसाइटी और एनजीओ (NGO) नियमन के तहत विदेशी फंडिंग पर और अधिक नियंत्रण, "राष्ट्रीय हित" मानकों के आधार पर पंजीकरण/कैंसिलेशन, चीन में विदेशी व स्थानीय एनजीओज (NGOs) पर कड़े नियम की तरह लागू करने होंगे।

वहीं, सामाजिक स्थिरता पर सुरक्षा-प्रमुख नीति के तहत आंतरिक सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका बढ़ाना, "सामाजिक स्थिरता" के नाम पर विरोध-प्रदर्शन और असहमति पर सख़्त नियंत्रण स्थापित करना होगा। यह सब नागरिक स्वतंत्रताओं और लोकतांत्रिक संस्कृति को गहरा झटका देगा; जिससे राजनीतिक प्रतिरोध, अंतरराष्ट्रीय दबाव और संघीय तनाव लगभग निश्चित हैं लेकिन भारत के दूरगामी हित में ऐसा करना ही होगा, अन्यथा यह देश पश्चिमी देशों की कठपुतली बनकर रह जायेगा।

# ईरान ने भारत में फंसे अपने 180 नौसैनिकों को सुरक्षित निकाल लिया है

**अमेरिका देखता रह गया, भारत-श्रीलंका से अपने 267 नौसैनिकों को यूं ले उड़ा ईरान, आर्मी चीफ का बड़ा ऐलान**

ईरान ने भारत में फंसे अपने 180 नौसैनिकों को सुरक्षित निकाल लिया है। ये सभी ईरानी युद्धपोत IRIS Lavan पर तैनात थे। इस ईरानी जहाज में खराबी आने के बाद भारत ने कोच्चि में उसे शरण दी है। यही नहीं ईरान ने श्रीलंका से अपने 84 नौसैनिकों के शव को भी निकाल लिया है। ये सभी अमेरिकी परमाणु पनडुब्बी के टारपीडो हमले में मारे गए थे। ईरानी नौसैनिक IRIS Dena युद्धपोत पर सवार थे जो भारत में नौसैनिक अभ्यास से लौट रहा था और श्रीलंका के पास समुद्र में अमेरिकी हमले का शिकार हो गया था। ईरानी नौसेना का एक और जहाज IRIS बुशहर अभी श्रीलंका में त्रिकोंमाली बंदरगाह पर है जहां उसके इंजन को ठीक किया जा रहा है। ईरान ने इन सभी नौसैनिकों और शवों को निकालने के लिए स्पेशल चार्टर्ड प्लेन का इंतजाम किया था। अमेरिका और इजरायल के साथ जारी युद्ध के बीच ईरान ने अपने नौसैनिकों को निकालने के लिए एक खास रास्ता चुना था। आइए समझते हैं पूरा मामला...

श्रीलंकाई एक्सपर्ट रंगा श्रीलाल के मुताबिक ईरानी चार्टर्ड विमान सबसे पहले श्रीलंका गया और वहां से 84 नौसैनिकों के शव लेने के बाद मट्टाला एयरपोर्ट से उड़ान भरी। इसके बाद ईरान का प्लेन भारत के कोच्चि शहर पहुंचा और यहां से करीब 180 नौसैनिकों को लिया। इसके बाद ईरानी चार्टर्ड फ्लाइट ने भारत के हवाई क्षेत्र से गुजरते हुए पाकिस्तान में प्रवेश किया। पाकिस्तान से अफगानिस्तान के रास्ते इस वमिान ने कैस्पियन सागर को पार किया और फिर अजरबैजान की सीमा के अंदर से होते आर्मेनिया पहुंचा।

यह ईरानी वमिान अब आर्मेनिया के येरेवान शहर में लैंड कर चुका है। यहां से सभी ईरानी नौसैनिकों और मारे गए सैनिकों के शव को सड़क मार्ग से ईरान ले जाया जाएगा। अभी श्रीलंका में ईरान के 32 नौसैनिकमौजूद हैं जिन्हें IRIS Dena पर अमेरिकी हमले के बाद बचाया गया था। इन सभी का अभी श्रीलंका के अस्पतालों में इलाज चल रहा है। इन्हें बाद में वापस ईरान ले जाया जाएगा। इससे पहले अमेरिका और इजरायल ने श्रीलंका पर दबाव बनाया था कि वह ईरानी नौसैनिकों के शव को वापस नहीं ले जाने दे।

श्रीलंका की अदालत ने अमेरिकी धमकी को धता बताते हुए इन सभी शवों को ईरानी दूतावास को सौंपने के लिए कहा था। श्रीलंका की नौसेना का कहना है कि अभी कई ईरानी नौसैनिकों के शव लापता हैं। इस बीच ईरानी सेना के कमांडर इन चीफ अमीर हातमी ने कहा है कि हिंद महासागर में ईरान के युद्धपोत पर हुए अमेरिकी हमले का जवाब जरूर दिया जाएगा। उस स्ट्राइक में ईरान के युद्धपोत आईआरआईएस डेना के 100 से ज्यादा नौसैनिकों की मौत हो गई थी। ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी आईआरएनए ने इसकी जानकारी दी है। उसके मुताबिक यह जहाज सैन्य अभ्यास पूरा करके हिंद महासागर से वापस ईरान लौट रहा था, तभी उस पर हमला हुआ। उस समय जहाज किसी लड़ाई में शामिल नहीं था।

**संसद में AAP सांसद राघव चड्ढा ने उठाया सैनिटरी पैड का मुद्दा, कहा- शराब खुलेआम बिकती है, सेनेटरी पैड अखबार में लपेटकर दिया जाता है.**

# "बच्चा पालने के लिए अगर मुझे किसी के साथ सोना भी पड़े, तो मैं वो भी कर लूंगी।" : चंद्रिका दीक्षित 'वड़ा पाव गर्ल'

परिवहन विशेष न्यूज

चंद्रिका दीक्षित, जिन्हें सोशल मीडिया पर 'वड़ा पाव गर्ल' के नाम से पहचाना जाता है, हाल ही में एक पॉडकास्ट में बयान दिया। उनका कहना था "बच्चा पालने के लिए अगर मुझे किसी के साथ सोना भी पड़े, तो मैं वो भी कर लूंगी।" यह एक वाक्य न सिर्फ उनकी व्यक्तिगत मजबूरी को उजागर करता है, बल्कि हमारे समाज की गहरी नैतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना पर सवाल भी खड़ा कर देता है।

चंद्रिका स्पष्ट रूप से कहती हैं कि उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता उनका बच्चा है। उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए वे किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। अगर समाज उन्हें गलत समझे, क्लिप वायरल हो जाए, लोग आलोचना करें या उनकी इज्जत पर सवाल उठाएँ, तो भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे तर्क देती हैं कि आज का सोशल मीडिया एक वैध कमाई का माध्यम बन चुका है हजारों-लाखों लोग इसी प्लेटफॉर्म से अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं, परिवार पाल रहे हैं। उनके अनुसार, मेहनत का कोई भी रूप गलत नहीं है जब तक उसका मकसद बच्चे को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन देना हो। उनका मानना है कि माँ का प्यार सीमाओं से परे है और बच्चे की परवरिश के नाम पर कोई भी रास्ता चुनना उनकी व्यक्तिगत आजादी का हिस्सा है।

लेकिन यही बयान समाज को दो हिस्सों में बाँटकर रख देता है। एक तरफ लोग इसे माँ की अंधी भावुकता और खतरनाक मिसाल मानते हैं। उनका तर्क है कि बच्चे की परवरिश के नाम पर नैतिकता की हर सीमा तोड़ना सही नहीं। अगर आज एक माँ यह कह रही है, तो कल दूसरी माँ इसे सामान्य मान लेगी और समाज में इज्जत, सम्मान और नैतिक मूल्यों का क्या होगा? बच्चा भले ही अच्छी जिंदगी पाए, लेकिन वह किस माहौल में बड़ा होगा जहाँ उसके लिए माँ की गरिमा की कोई कीमत नहीं? दूसरी तरफ कई लोग समाज की दोहरी मानसिकता पर हमला बोलते हैं। वे पूछते हैं कि आखिर एक महिला को ऐसी नौबत क्यों आती है? क्यों हमारे समाज में एकल माँ के लिए आर्थिक सुरक्षा, सरकारी सहायता, परिवार का सहारा या सम्मानजनक रोजगार के विकल्प इतने कम हैं? पुरुषों पर इतनी जिम्मेदारी क्यों नहीं डाली जाती जितनी औरतों पर? यह बहस दरअसल पैट्रिआर्की

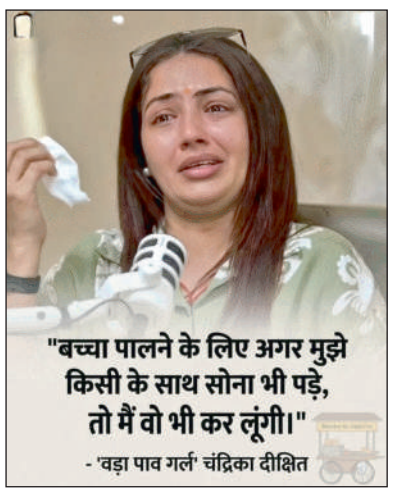


की उस व्यवस्था को चुनौती देती है जो औरत से हर त्याग की उम्मीद रखता है, लेकिन उसकी मजबूरी को नजरअंदाज कर देता है।

सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो यह मुद्दा सिर्फ चंद्रिका का व्यक्तिगत फैसला नहीं है। यह उस पूरे सिस्टम की विफलता है जिसमें हम औरतों को माँ बनने के बाद 'सब कुछ सह लो' की संस्कृति सिखाते हैं, लेकिन उनकी आर्थिक स्वतंत्रता, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करते। तर्क यह है कि बच्चे की जिम्मेदारी निभाने के नाम पर हर रास्ता जायज नहीं ठहराया जा सकता। मेहनत की कोई भी सीमा नहीं, लेकिन इज्जत और नैतिकता की एक लाइन जरूर होनी चाहिए। अगर हम उस लाइन को पार करने की इजाजत दे देंगे, तो आने वाली पीढ़ी क्या सीखेगी? क्या वे भी यही मान लेंगे कि लक्ष्य हासिल करने के लिए कोई भी समझौता ठीक है? क्या समाज में सम्मान, गरिमा और नैतिकता की कोई कीमत नहीं रह जाएगी?

आखिरकार, बच्चे का भविष्य जरूर महत्वपूर्ण है, लेकिन वह भविष्य सिर्फ पैसे और सुविधाओं से नहीं, बल्कि माँ के सम्मान, समाज के नैतिक मूल्यों और एक स्वस्थ माहौल से भी बनता है। क्या हम इस संतुलन को बनाए रख पाएँगे, या फिर मजबूरी के नाम पर हर सीमा तोड़ते जाएँगे? यह सवाल आज हर उस माँ के लिए है जो संघर्ष कर रही है और हर उस समाज के लिए है जो खुद को प्रगतिशील कहता है लेकिन असल में औरतों की आवाज को सिर्फ सुनता है, समझता नहीं।

# आंध्र प्रदेश में तिरुपति मंदिर के लिए ले जाया जा रहा करीब 21 हजार लीटर घी से भरा एक टैंकर रास्ते में दुर्घटनाग्रस

परिवहन विशेष न्यूज

आंध्र प्रदेश में तिरुपति मंदिर के लिए ले जाया जा रहा करीब 21 हजार लीटर घी से भरा एक टैंकर रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त होकर पलट गया। हादसे के बाद टैंकर में भरा घी सड़क पर फैल गया। घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के गांवों के लोग बड़ी संख्या में मौके पर पहुंच गए। कई लोग अपने साथ बाल्टियाँ, डिब्बे और अलग-अलग तरह के बर्तन लेकर आए और सड़क पर फैले घी को भरने लगे।

स्थानीय लोगों के अनुसार, पुलिस और प्रशासन के पहुंचने से पहले ही काफी लोग वहां जमा हो चुके थे और घी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे थे। कुछ ही देर में वहां भीड़ बढ़ गई और मौके पर अफरा-तफरी जैसा माहौल बन गया।

बताया जा रहा है कि यह घी तिरुपति मंदिर में धार्मिक कार्यों और प्रसाद के लिए भेजा जा रहा था। टैंकर

पलटने से घी का बड़ा हिस्सा सड़क पर बह गया।

सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और भीड़ को हटाकर स्थिति को नियंत्रित किया। इस हादसे में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है, हालांकि टैंकर में भरा काफी घी खराब हो गया।

# महाकुंभ वायरल गर्ल 'मोनालिसा भोसले' की फरमान खान से शादी पर पूरे पारदी समाज को दुखी और नाराज कर दिया

परिवहन विशेष न्यूज

महाकुंभ वायरल गर्ल 'मोनालिसा भोसले' ने फरमान खान से शादी कर भले ही अपने जीवन का भला बुरा सोचने की आजादी की वकालत की है, लेकिन पूरे पारदी समाज को दुखी और नाराज कर दिया है। उनका स्पष्ट कहना है कि पारदी समाज में मुस्लिम समुदाय से शादी की परंपरा कभी नहीं रही। यदि वे एमपी में शादी करते तो जिंदा नहीं बचते।फरमान से शादी के बाद क्षेत्र का पारदी समाज ठगा महसूस कर रहा है। समाज की महिला सिमरन ने बताया कि पारदी समाज में किसी भी सूरत में विवाह योग्य लड़कियां मुसलमान तो दूर किसी भी अन्य समाज के करोड़पति व्यक्ति से भी शादी नहीं करती हैं। समाज की लड़कियां बेहद अनुशासित होती हैं और अपने मां-बाप और परिजनों की पसंद और परामर्श से ही शादी करती हैं। उन्होंने बताया कि यदि कोई अन्य समाज का अमीर व्यक्ति रोता गिड़गिड़ाता भी है तो भी लड़की समाज और परिवार से अलग नहीं जाती।उन्होंने बताया कि यदि क्षेत्र में उसने फरमान से शादी कर ली होती तो शायद फरमान जिंदा बच कर नहीं जाता। उन्होंने बताया कि मोनालिसा भोली भाली लड़की है और उसे जादू टोने, कुछ खिला पिला कर अथवा बरगला कर ब्रेनवाश कर दिया गया और शादी कर ली। मोनालिसा की गलती को पूरा समाज भुगत रहा है।उन्होंने कहा कि पारदी समाज की लड़कियां और युवतियां मोनालिसा को रोल मॉडल मान रही थी। और वह इसलिए भी प्रभावित थी कि फिल्मी करियर चल निकलने पर वह स्कूल खोलने की भी बात करती थी। लेकिन उसने एक घटनाक्रम से सब कुछ तहस-नहस कर दिया और उन लड़कियों और युवतियों को गलत संदेश दे दिया। उन्होंने कहा कि मोनालिसा के पिता जय भोंसले पारदी समाज के प्रमुख हैं, और वह भी इस घटनाक्रम के बाद ठगे से महसूस कर रहे हैं और उनकी इज्जत समाज में तार-तार हो गई है। वह जैसे तैसे जान बचाकर केरल से वापस लौटे।मोनालिसा के चाचा विजय सिंह भोसले भी बेहद दुखी थे। उन्होंने कहा कि फरमान खान ने कभी बताया ही नहीं कि वह मुस्लिम है। जब वह उज्जैन आया था तो बाकायदा रुद्राक्ष पहनकर और टीका लगाकर महाकाल के दर्शन करने गया। उन्होंने बताया कि परिवार वालों को और मोनालिसा के पिता को कभी यह पता ही नहीं चला कि वह मुसलमान है।उन्होंने बताया कि फरमान ने रीलें बनाकर मोनालिसा और उसके पिता को प्रभावित कर लिया। उन्होंने कहा कि वह ट्रेनर महेंद्र लोधी के यहां उज्जैन में प्रशिक्षण ले रही थी, लेकिन इन लोगों के बार-बार फोन करने और सब्ज बाग दिखाने के चलते केरल चली गई। वहां इन्हें खूबसूरत जगह पर ले जाया गया, यहां तक की मंत्री के घर भी ले जाया गया, जिसके चलते उनकी आंखें चकाचौंध हो गई और यह प्रभावित हो गए। उन्हें उज्जैन के मुकाबले कम खर्च में ठहरने और ट्रेनिंग की भी बात की गई, जिससे फिल्मों में अपने अच्छे करियर की तलाश कर रहीमोनालिसा और उसके पिता आश्वस्त हो गए। उन्होंने कहा मात्र एक हफ्ते के भीतर यह घटनाक्रम होना बेहद तकलीफदायक है। उन्होंने बताया कि हम कहीं के नहीं रहे।उन्होंने बताया कि मोनालिसा के पिता जय भोसले ने केरल से वापसी के लिए फरमान खान को पैसा देकर फ्लाइट की दो टिकट बुक कराई थी। जय भोसले ने फरमान से रिक्वेस्ट की कि वह उन्हें एयरपोर्ट ड्रॉप कर दे। इस पर फरमान दो-तीन साथियों के साथ उन्हें एयरपोर्ट ले जाने के नाम पर निकाला और पुलिस थाने ले गया। वहां पुलिस वालों ने जय भोंसले से कहा कि वह 18 की हो चुकी है और अपना भला बुरा समझती है तुम यहां से चले जाओ। मोनालिसा का पिता वहां सिर पटकते रह गया, लेकिन उसके सामने से उसकी लड़की को बहका कर ले जाया गया और पूर्व नियोजित षडयंत्र के तहत फटाफट शादी कर दी गई।

# न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने अदालतों व केंद्रीय जेल का किया निरीक्षण; राष्ट्रीय लोक अदालत में 33,393 मामलों का निपटारा

अमृतसर, 14 मार्च (साहिल बेरी)

Justice Rohit Kapoor, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश तथा सेशन डिवीजन अमृतसर के प्रशासनिक न्यायाधीश ने आज अदालतों और केंद्रीय जेल अमृतसर का वार्षिक निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान केंद्रीय जेल अमृतसर का विस्तृत रूप से जायजा लिया गया। इस अवसर पर न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने जेल में बंद कैदियों की सुविधा के लिए टेलीमेडिसिन सुविधा का उद्घाटन किया, जिससे कैदी डिजिटल माध्यम से डॉक्टरों से परामर्श ले सकेंगे। उन्होंने जेल अस्पताल का भी निरीक्षण किया और कैदियों को उपलब्ध कराई जा रही चिकित्सा सुविधाओं की समीक्षा की।

इस दौरान न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने कैदियों से बातचीत कर उनकी समस्याओं को भी सुना और संबंधित अधिकारियों को इन शिकायतों की जांच कर उचित समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने जेल फैक्ट्री का निरीक्षण कर मशीनरी और कैदियों द्वारा किए जा रहे व्यावसायिक कार्यों की भी समीक्षा की।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने जेल परिसर में एक पौधा भी लगाया और "ईच वन, प्लांट वन" का संदेश दिया।

इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय लोक अदालत में पेश होने वाले वादियों से बातचीत की और आपसी सहमति से विवादों को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान फैमिली कोर्ट अमृतसर में लंबित एक मामले में उनके व्यक्तिगत हस्तक्षेप से समझौता हुआ।

अजनाला की अदालत में ऋण वसूली से जुड़े दो मामलों में, जिनकी कुल विवादित राशि 29 लाख रुपये थी, लोक अदालत के दौरान 14 लाख रुपये में समझौता कराया गया। इसी तरह 14 लाख रुपये के एक अन्य ऋण विवाद का निपटारा 4 लाख रुपये की अंतिम राशि पर कराया गया।

राष्ट्रीय लोक अदालत के अवसर पर सेशन डिवीजन अमृतसर में कुल 46 बेंचों का गठन किया गया। इनमें से 37 बेंच अमृतसर मुख्यालय में, 5 बेंच अजनाला में तथा 4 बेंच बाबा बकाला साहिब में स्थापित की गईं। कुल 35,049 मामलों को सुनवाई के लिए रखा गया, जिनमें से 33,393 मामलों का आपसी सहमति से निपटारा कर दिया गया।

लोक अदालत के दौरान कई महत्वपूर्ण विवादों का समाधान भी हुआ। फैमिली कोर्ट अमृतसर में वर्ष 2022 से लंबित भरण-पोषण विवाद में प्रतिवादी द्वारा याचिकाकर्ता को 7,09,000 रुपये का भुगतान करने पर समझौता हुआ।

इसी प्रकार "आईसीआईसीआई बैंक बनाम कंचन शिंगारी" नामक वित्तीय विवाद, जो वर्ष 2018 से लंबित था और जिसमें 2.20 करोड़ रुपये का चेक विवाद शामिल था, लोक अदालत के दौरान आपसी सहमति से सुलझा लिया गया।

इसके अलावा "पवन कुमार भाटिया बनाम ममता भाटिया" नामक कब्जा संबंधी सिविल मुकदमे का भी निपटारा हुआ, जब पक्षकारों ने आपसी सहमति से विवाद समाप्त करने का निर्णय लिया और वादी ने मामला वापस ले लिया।

एक अन्य मामले में पिछले 12 वर्षों से अलग रह रहे पति-पत्नी ने लोक अदालत के दौरान आपसी सहमति से फिर से साथ रहने का निर्णय लिया और अपने दो बच्चों के साथ दोबारा वैवाहिक जीवन शुरू करने पर सहमत हो गए।

इस निरीक्षण और राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन में जिला एवं सत्र न्यायाधीश अमृतसर जतिंदर कौर, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश बलजिंदर सिंह, एसीजेएम परमिंदर कौर बैंस, सीजेएम सुप्रीत कौर तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अमृतसर के सचिव अमरदीप सिंह बैंस सहित अन्य न्यायिक अधिकारियों व कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इस अवसर पर न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने सेशन डिवीजन अमृतसर के सभी न्यायिक अधिकारियों को संबोधित करते हुए न्यायिक कार्यप्रणाली को और प्रभावी बनाने, मामलों का समय पर निपटारा करने तथा लोक अदालतों के माध्यम से आपसी समझौते को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

इसके बाद न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अन्य वरिष्ठ न्यायिक अधिकारियों के साथ अजनाला कोर्ट कॉम्प्लेक्स का भी दौरा किया, जहां उन्होंने न्यायालय परिसर का निरीक्षण किया। उन्होंने अजनाला बार एसोसिएशन के सदस्यों से बातचीत कर उनकी समस्याएं और सुझाव सुने तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

इस अवसर पर अजनाला में ई-मुलाकात सुविधा का भी उद्घाटन किया गया, जिससे जेलों में बंद आरोपियों और उनके वकीलों के बीच बेहतर संवाद और कानूनी परामर्श की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

यह दौरा न्यायिक ढांचे और प्रशासनिक कार्यप्रणाली की व्यापक समीक्षा के साथ संपन्न हुआ, जिसका उद्देश्य न्याय व्यवस्था को और मजबूत बनाना तथा वादियों, वकीलों और कैदियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023